BHEEM PATRIKA
भीम पत्रिका
October, 2024
Vol.1, Issue 12

According to Emile Durkheim: “there are three essential common features to all religion
(1) Belief (2) Ritul (3) community of worshipper. Durkheim gave theory of the sacred and profane.

From Editor`s desk

Consequences of religious bigotry

Dr. Rahul Kumar Balley
M.A., PhD

Since civilisation, we come to read in the history books about different religions and faiths. Disciples started building temples across the world to pay tribute to their respective religious gurus, saints.

Tathagata Gautama Buddha, Jesus Christ, Guru Nanak, Prophet Mohammed left their sermons and teachings for the followers. After their death, the followers starting writing books about the history of their life. From these books we come to know one common feature among all these founder that is Simplicity. They all lived a life in poverty. They all bore unbearable onslaught on them. They were never seen participating or collaborating in political or economic affairs of the state despite Kings and Emperors offered them the seat of power.

The time has changed. The followers of different religions and faiths are found polluting the teachings of simple and honest Guru as described above. Now a days, the majority of the so-called Baba are found collaborating with political parties and they receive unbridled political patronage from political leaders for their own selfish ends. Their opulent style show that they are making religion a commerce. They are found playing a crucial role in making and unmaking political leaders and political parties. They are found traveling by charter flights and staying in seven-star hotels.

The end result of this pollution of religions and faiths is to destroy the scientific temper of the general populace. The end result of this pollution is creating a group of loafers who burn, loot and demolish the site of opposite religion and faith in order to glorify their own religion and faith. In the past 20 years, we found that the role of the state in promoting hatred, jealousy and violence is manifold higher in collaboration with Baba’s`.

With burgeoning of religious hatred among us, we, as India's, are inciting the rule of eye for eye, which would make all of us blind one day.

If leaders, followers and Baba do not stop this pollution and commercialization of religions and faiths India would lose religious sacredness and soon become a country in Asia a country of religiosity profanity.

हिंदी में अनुवाद

सभ्यता के समय से ही हम इतिहास की किताबों में विभिन्न धर्मों और आस्थाओं के बारे में पढ़ते आए हैं। शिष्यों ने अपने-अपने धार्मिक गुरुओं, संतों को श्रद्धांजलि देने के लिए दुनिया भर में मंदिरों का निर्माण शुरू कर दिया।

तथागत गौतम बुद्ध, ईसा मसीह, गुरु नानक, पैगंबर मोहम्मद ने अनुयायियों के लिए अपने उपदेश और शिक्षाएँ छोड़ीं। उनकी मृत्यु के बाद, अनुयायियों ने उनके जीवन के इतिहास के बारे में किताबें लिखना शुरू कर दिया। इन पुस्तकों से हमें इन सभी संस्थापकों में एक सामान्य विशेषता का पता चलता है और वह है सरलता। वे सभी गरीबी में जीवन जीते थे। उन सभी ने उन पर असहनीय हमला सहा। राजाओं और सम्राटों द्वारा उन्हें सत्ता की कुर्सी की पेशकश के बावजूद उन्हें कभी भी राज्य के राजनीतिक या आर्थिक मामलों में भाग लेते या सहयोग करते नहीं देखा गया।

समय बदल गया है. जैसा कि ऊपर वर्णित है, विभिन्न धर्मों और आस्थाओं के अनुयायी सरल और ईमानदार गुरु की शिक्षाओं को प्रदूषित करते पाए जाते हैं। आजकल, अधिकांश तथाकथित बाबा राजनीतिक दलों के साथ गठजोड़ करते पाए जाते हैं। उनकी वैभवशाली शैली से पता चलता है कि वे धर्म को व्यापार बना रहे हैं। वे राजनीतिक नेताओं और राजनीतिक दलों को बनाने और बिगाड़ने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते पाए जाते हैं। वे चार्टर उड़ानों से यात्रा करते और सात सितारा होटलों में ठहरते पाए जाते हैं।

धर्मों और आस्थाओं के इस प्रदूषण का अंतिम परिणाम आम जनता के वैज्ञानिक स्वभाव को नष्ट करना है। इस प्रदूषण का अंतिम परिणाम आवारा लोगों का एक समूह तैयार करना है जो अपने धर्म और आस्था का महिमामंडन करने के लिए विपरीत धर्म और आस्था के स्थलों को जलाते हैं, लूटते हैं और ध्वस्त करते हैं। पिछले 20 वर्षों में हमने पाया कि घृणा, ईर्ष्या और हिंसा को बढ़ावा देने में राज्य की भूमिका कई गुना अधिक है।

बढ़ती धार्मिक नफरत के साथ, हम, भारतवासी, आंख के बदले आंख के नियम को बढ़ावा दे रहे हैं, जो एक दिन हम सभी को अंधा बना देगा। नेता, अनुयायी और बाबा इस प्रदूषण और धर्मों और आस्थाओं के व्यावसायीकरण को नहीं रोकते हैं तो भारत धार्मिक पवित्रता खो देगा और जल्द ही एशिया में धार्मिक अपवित्रता का देश बन जाएगा ।

(अनुवाद बीआर भारद्वाज द्वारा)

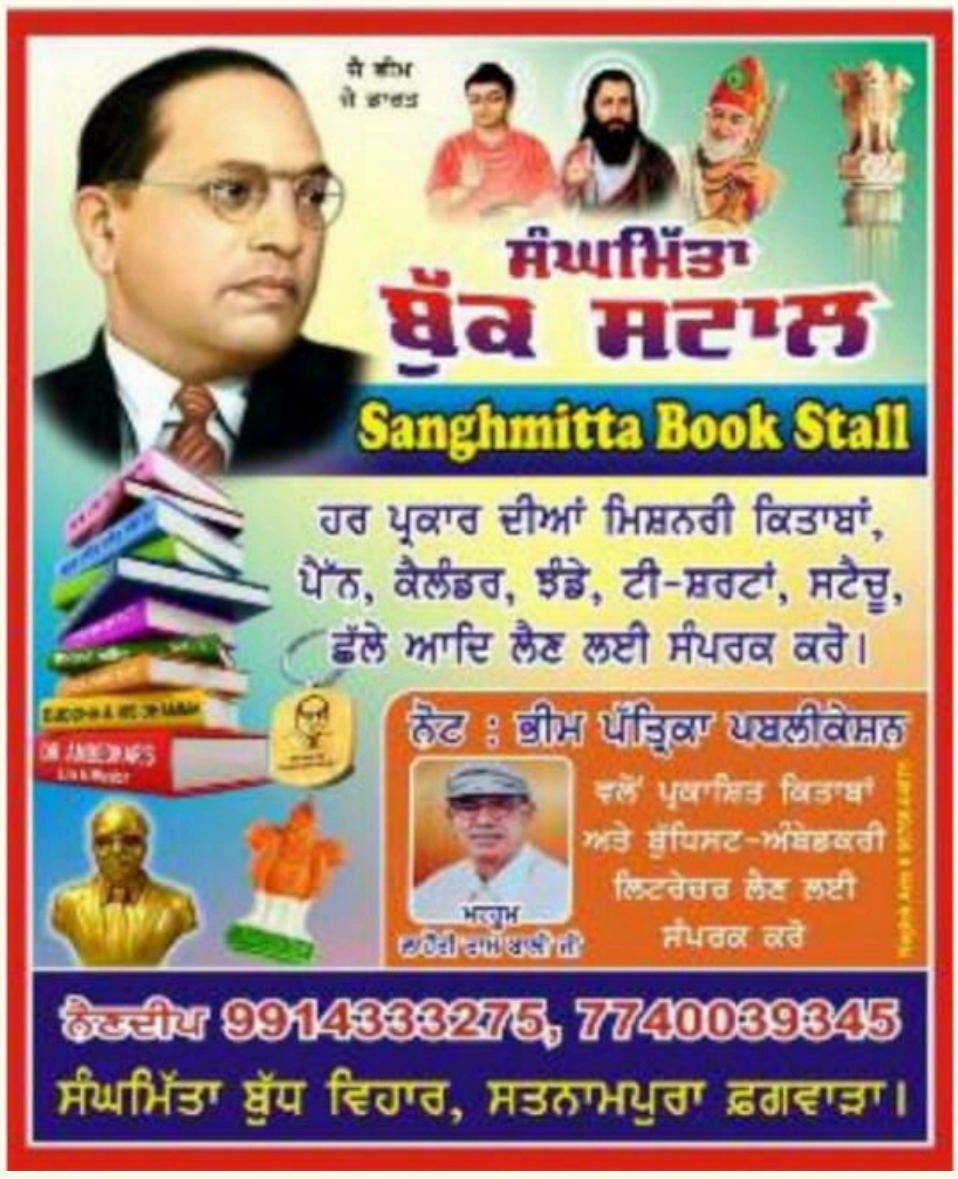

BHEEM PATRIKA
भीम पत्रिका
October, 2024
Vol.1, Issue 12

News

Most of the politicians and historian are Brahmins and cannot be expected to have the courage to expose the misdeeds of their ancestors or admit the evils perpetrated by them-Dr. B.R. Ambedkar, (BAWS, vol.3,p.309.)

Shraddha

By the time he reached from verse 191 to verse 250, Kulluk also began to feel that the words expressed in the verses tarnish the image of Brahmins, because verse 250 states " The ancestors of one who eats during the Shraddha and had intercourse with a Vrishali (Shudra) on that day sleeping his excrement for a month". This also implies that having intercourse with a Shudra after eating during the Shraddha is a common occurrence. Upon reaching this point, Kulluk also thought of covering up this shameless reality. However, he forgot that in verse 191, in the context of the invited Brahmin for the Shraddha, he had already written the meaning of the word 'Vrishali' as Shudra Kulluk`s follower, the author of the Maniprabha commentary, did the same. He wrote 'Shudra' as the meaning in verse 191 and 'his wife' in the meaning of verse 250. However, other commentators such as Arya Samaj`s Dr. Surendra Kumar Sanatani Pandit Rameshwar Bhatt, English scholar Buhler, etc. have also interpreted 'Shudra' in the meaning of verse 250, which is absolutely correct, because the original text states, "Vrishalitalpam adhigacchati," meaning one who enters the bed of a Shudra female (G. Buhler, The laws of Manu, The Sacred Books of the East, p.131). Sharma (Ajnat)Surendra Kumar, (2010), Manusmriti in 21st century, Vishv Vijay Pte Ltd, New Delhi, p.110.

हिंदी अनुवाद

श्रद्धा

श्लोक 191 से श्लोक 250 तक पहुंचते-पहुंचते कुल्लुक को भी लगने लगा कि श्लोक में व्यक्त शब्द ब्राह्मणों की छवि को धूमिल करते हैं, क्योंकि श्लोक 250 में कहा गया है, "श्राद्ध के दौरान भोजन करने वाले और वृषाली के साथ संभोग करने वाले के पूर्वज होते हैं।" (शूद्र) उस दिन उसके मलमूत्र में एक माह तक सोयें "। इसका तात्पर्य यह भी है कि श्राद्ध के दौरान भोजन करने के बाद शूद्र के साथ संभोग करना एक सामान्य घटना है। इस बिंदु पर पहुंचकर कुल्लूक ने भी इस बेशर्म हकीकत पर पर्दा डालने की सोची. हालाँकि, वह भूल गए कि श्लोक 191 में, श्राद्ध के लिए आमंत्रित ब्राह्मण के संदर्भ में, उन्होंने पहले ही 'वृशाली' शब्द का अर्थ लिख दिया था क्योंकि मणिप्रभा भाष्य के लेखक शूद्र कुल्लुक के अनुयायी ने भी यही किया था। उन्होंने श्लोक 191 में अर्थ के रूप में 'शूद्र' और श्लोक 250 के अर्थ में 'उसकी पत्नी' लिखा। हालांकि, आर्य समाज के डॉ. सुरेंद्र कुमार सनातनी पंडित रामेश्वर भट्ट, अंग्रेजी विद्वान बुहलर आदि जैसे अन्य टिप्पणीकारों ने भी ऐसा किया है। श्लोक 250 के अर्थ में 'शूद्र' की व्याख्या की गई है, जो बिल्कुल सही है, क्योंकि मूल पाठ में कहा गया है, "वृशालितलपं अधिगच्छति," जिसका अर्थ है वह जो शूद्र महिला के बिस्तर में प्रवेश करता है (जी. बुहलर, मनु के नियम, द सेक्रेड बुक्स) पूर्व का, पृ.131).

(संदर्भ: शर्मा (अज्ञात) सुरेंद्र कुमार, (2010), 21वीं सदी में मनुस्मृति, विश्व विजय पीटीई लिमिटेड, नई दिल्ली, पृष्ठ 110.

What is a Nation?

According to Dr. Ambedkar, “A nation is not a country in the physical sense of the country whatever degree of geographical unity it may possess. A nation is not people synthesized by a common culture derived from common language, common religion or common race. To me, “Nationality is a subjective psychological feeling. It is a feeling of a corporate sentiment of oneness which makes those who are charged with it feel that they are kith and kin. This national feeling is a double-edged feeling. It is at once a felling of fellowship for one`s own kith and an anti-fellowship feeling for those who are not one`s own kith. It is a feeling of “consciousness of kind “which binds together those who are outside the limits of the kindred. It is longing to belong to one`s own group and a longing not to belong to any other group. This is the essence of what is called a nationality and national feeling. (BAWS, vol.3. p.309.)

हिंदी में अनुवाद

राष्ट्र क्या है?

डॉ. अम्बेडकर के अनुसार, “एक राष्ट्र भौतिक अर्थों में एक देश नहीं है, चाहे उसमें किसी भी स्तर की भौगोलिक एकता क्यों न हो। एक राष्ट्र सामान्य भाषा, सामान्य धर्म या सामान्य जाति से प्राप्त सामान्य संस्कृति द्वारा संश्लेषित लोग नहीं हैं। मेरे लिए, “राष्ट्रीयता एक व्यक्तिपरक मनोवैज्ञानिक भावना है। यह एकता की कॉर्पोरेट भावना की भावना है जो उन लोगों को महसूस कराती है जिन पर इसका आरोप है कि वे सगे-संबंधी हैं। यह राष्ट्रीय भावना दोधारी भावना है। यह एक ही समय में किसी के अपने रिश्तेदारों के लिए संगति का हनन है और उन लोगों के लिए संगति-विरोधी भावना है जो अपने रिश्तेदारों के नहीं हैं। यह "समान की चेतना" की भावना है जो उन लोगों को एक साथ बांधती है जो सगे-संबंधियों की सीमा से बाहर हैं। यह किसी के अपने समूह से संबंधित होने की लालसा है और किसी अन्य समूह से संबंधित न होने की लालसा है। जिसे राष्ट्रीयता और राष्ट्रीय भावना कहा जाता है उसका यही सार है। (बीएडब्ल्यूएस, खंड 3. पृष्ठ 309)

Mayawati cancelled Ravi Gautam ticket from Ghaziabad, made serious allegations against party brokers.

Ravi Gautam, BSP candidate whose ticket Mayawati cancelled ,has levelled serious allegations against the party. His statement published in Dainik Bhaskar on 28.09.2024, "I have spent 20-25 lakh rupees in the programs held so far. I was made to deposit 10 lakh rupees in the party fund in the name of ticket".Money was demanded from me in the name of cases' Ravi Gautam made serious allegations against senior BSP leaders Munkad Ali, Shamshuddin Rain, Rajkumar, Virendra Jatav, Kuldeep etc.There are two cases against me. One of these cases is related to the April 2 SC-ST reservation uproar and the other case is from Tamil Nadu, where I had gone to join the protest against the murder of the state president. Behenji said - you have cases against you, we will not contest the elections. "I will not support BSP at all after today. My shortcomings were so much that I could not pay the brokers. After working for 15 years, I am standing at zero today, said Ravi Guatam" (Dainik Bhaskar, 28.09.2024).

BHEEM PATRIKA
भीम पत्रिका
Vol.1, Issue 12

NEWS SNIPPETS

Cabinet approval for One Nation, One Election

- In March, 2024, former President Kovind Nath submitted report on ‘One Nation, One Election’ to President Droupadi Muru. Cabinet approved this proposal. Home Minister Amit Shah indicated after cabinet approval that ‘One Nation, One Election’ will become a reality in the NDA government. Congress opposed this by saying that it is impractical. TMC called it a ‘cheap stunt’ of the BJP. According to Sikha Mukerjee (The Asian Age, 25Sep, 2024), “One Nation-One Election overturns the fundamentals of democracy, their rights to decide. It takes away the basics of initiating change by stripping people of the power to make decisions and periodically, revising their decisions, trough different schedules for different elections.”

India`s FCRA makes global donations to NGO very difficult: US Senator

- ·US Senator Time Kaine said during a Congressional hearing on Anti-NGO laws and other Tools of Democratic Repression ‘organised by the Senate Foreign Relations Committee, “India has a law called the Foreign Contribution Regulation Act that was amended in 2010 and has been amended again in 2020 that makes it very difficult for NGOs operating in India to receive donations from people around the world (Business Standard, Sep 14 2024).

No justice in Hathras to 19 years old Dalit woman

- ·19 years old Dalit woman was sexually assaulted and murdered by three Hindu boys. 04 years have gone, no justice for her. The family has left the ashes of the victim unimmersed. The government made promises of a job for a family member and a house -have remain unfulfilled. The elder brother said, “when the three accused were released and they came home they were welcomed with garlands and their families’ distributed sweets in the neighbourhood. They accused feels they are invincible. (Times of India, 16.09.2024)

650 Dalit children future in dark

- From south Delhi`s Dakshinpuri, MLA Ajay Dutta had issued a notice that the property, held by the Samaj since 1964, be vacated in 30 days. Delhi L-G VK Saxena set aside an eviction and sealing order for the Dr BR Ambedkar Adarsh Vidyalaya. The Dalit community is involved in carrying out the task of educating poor and Dalit children at this Vidyalaya. AAP leaders are least bothered about the future of poor Dalit children.

Unemployment rate highest in the country

- ·Periodic Labour Force Survey(PLFS) report for 2023-2024 reveals that India`s employment rate remains steady at 3.2 percent. Many jobs lacking adequate wages and security particularly in informal sectors (The Asian Age 27 Sep,2024

Scheduled Caste Commission, Haryana

- ·Scheduled Castes Commission in Haryana has submitted a detailed report. According to the report, Haryana's "Other Scheduled Castes" (OSC) population stands at 3,064,686, with the major castes including Chamar, Jatiya Chamar, Rahgar, Raigar, Ramdasi, Ravidasi, Balahi, and Mochi.
- ·On the other hand, the "Deprived Scheduled Castes" (DSC) population is slightly higher at 3,374,264, comprising 36 castes. Among these, the key castes are Valmiki (Bhangi), Dhanak, Bazigar, Mazhabi-Sikh, Pasi, Meghwal, Khatik, and Sansi.
- ·At the micro-level, certain DSC castes have populations of less than a thousand, such as Dagi, Darain, Sanhal, and Sansoi, highlighting their extreme marginalization.

  In Haryana's Class I officer cadre, the disparity is stark: of the 928 Class I officers, 635 come from the OSC category, while only a small fraction belongs to the DSC. Moreover, among the 17 most marginalized DSC castes, including Sarera, Sansoi, Godola, and Deha, there are no Class I officers at all.

20 Months On, Dalits and Adivasis Left Without Land or Residential Plots In MP

- · Former Chief Minister of Madhya Pradesh, Shivraj Singh Chouhan, launched a grand initiative to distribute residential land titles to Dalits, Adivasis, and the landless in the state. This initiative was inaugurated at the Bagaj Mata Temple in Tikamgarh district, where a large program was organized to hand out these titles. However, 20 months have passed, and the Dalits and Adivasis who were promised land still have not received possession of it, nor have they received their residential plots. Now, these Dalits and Adivasis are running from one official to another.

Why BJP government in Arunachal Pradesh stopping Shankaracharya Swami Avimukteshwaranand Saraswati's on Cow slaughtering campaign-demanding ban on it.

A ban campaign on Cow slaughtering stopped by BJP (photo: Times of India,27 Oct,2024)

- Shankaracharya Swami Avimukteshwaranand Saraswati`s campaign advocating a ban on cow slaughtering in Arunachal Pradesh and Nagaland stopped. Authorities’ in both states denied entry to Swami citing concerns about public unrest and constitutional provisions (Times of India, 27 Oct,2024)/ Comments by editor: Is this love for Cow Mata of the BJP? Every Hindu should think over it.

BHEEM PATRIKA
भीम पत्रिका
Vol.1, Issue 12

NEWS SNIPPETS

Congress accuses BSP chief of taking ‘supari’ to support BJP, RSS

Mayawati, Chief Bahujan Samaj Party (BSP)

- · Unorganised Workers and Employees Congress Chairman Udit Raj asserted that it was important to “finish the BSP chief politically”. He said whenever Mr. Gandhi attacked the RSS and the BJP, Ms. Mayawati felt the pain. Bahujan Samaj Party (BSP) chief Mayawati for questioning Leader of the Opposition in the Lok Sabha Rahul Gandhi’s commitment to reservation. (The Hindu, 12 September 2024)

Dalit woman Sarpanch Denied a Chair in Gram Sabha, Told to Bring One from Home or Stand

Scheduled Caste Sarpanch Shraddha Singh standing without a chair. National Flag hoisted without her.

- ·According to state government orders, the flag hoisting was to be carried out by the Sarpanch. Shraddha had informed Panchayat Secretary Vijay Pratap Singh about the order, but by the time she arrived at the Panchayat premises, Deputy Sarpanch Dharmendra Singh Baghel had already hoisted the flag. Sarpanch Shraddha Singh described this as a clear example of conspiracy and insult against her.

BJP should come clean about their role in Operation Blue Star: Charanjit Singh Channi

Congress leaders Charanjit Singh Channi and Partap Singh Bajwa during a press conference, in New Delhi, on September 13, 2024. | Photo Credit: PTI

- Speaking amid the row over Rahul Gandhi’s comments on minorities in India at an event in the U.S., former Punjab CM says the Congress had apologized several times for both Operation Bluestar and the anti-Sikh riots But the BJP too should come clean, he said. “L.K. Advani by his own admission had said that the BJP had built pressure on the Indira Gandhi government for military action in Darbar Sahib,” Mr. Channi said.

Victim of Caste Prejudice

AAP leader Rajendra Pal Gautam posted photos from the event which took place in Delhi on October 5, on the occasion of Vijaya Dashami. HT 9oct, 2022.

- Rajendra Pal Gautam began his life with Samata Sainik Dal. He is a staunch Ambedkarite and practising Buddhist. In Delhi, he joined Aam Admi Party (AAP) and resigned. He joined Indian National Congress (INC) in Delhi and met Rahul Gandhi at his residence. Rajendra Pal Gautam protested when he raised voice in AAP for reservation in recruitment in Mohalla Clinic. Arvind Kejriwal outrightly rejected his request. Gautam said, "Arvind Kejriwal told him that you only talk and bother about Reservation". Gautam also alleged that he organised a public function in Ambedkar Bhawan on 5th Ocotber,2022 for religious mass conversion. People denounced Hinduism and embraced Buddhism. Anti- Dalit and Anti Buddhists, the BJP made this issue. The irony is that Arvind Kejriwal did not stand behind Rajendra Pal Gautam. From this it is clear that however AAP display Baba Saheb Dr BR Ambedkar and Saheed Bhagat Singh in party office as well as in Delhi and Punjab Government office but the party Chief including other top leaders are not interested in Reservation for the Dalits.

भीम पत्रिका

नमो बुद्धाए - जय भीम

तथागत बुद्ध

डॉ. बी.आर. अंबेडकर

APPEAL FOR DONATION !!

“Have you ever thought why we should have our own newspaper ?”

Remember, a community without a voice is known to be a dead community.

Therefore we need a newspaper to raise our voice. Bheem Patrika is the only newspaper which fearlessly exposes viciousness and superstition of Brahmanism.

“Respected Shri. L.R. Balley Ji started Bheem Patrika in 1958 to spread the mission of Baba Saheb Dr. B. R. Ambedkar.

“Following his legacy after his death at the age of 94 in 6th July, 2023, we have launched Bheem Patrika online in October, 2023.

“The content we publish is to highlight the thoughts of Dr. Ambedkar. We also publish articles and news on Buddhism. Apart from this, we analyze the news on atrocities on religious minorities to raise their voice consistently. “Every year we spend Rs.48,500/- on publishing Bheem Patrika.” We need your financial support to continue it since Bheem Patrika is the only paper that purely talks labout Ambedkarism and Buddhism.

“We kindly request our supporters, missionaries, sympathizers to donate whole-heartedly to continue this paper.”

Name : NAINDIP
Bank's Name : BANK OF INDIA
Account No. : 64091011002350
IFSC : BKID0006409
Bank Branch : Model Town Road, Jalandhar City (Punjab)

सहायता के लिए अपील !!

क्या आपने कभी सोचा है कि हमारा अपना अखबार क्यों होना चाहिए ?

याद रखें, बिना आवाज वाला समुदाय मृत माना जाता है.

इसलिए हमें अपनी आवाज उठाने के लिए एक अखबार की जरूरत है. भीम पत्रिका ही एकमात्र ऐसा अखबार है जो निडर होकर ब्राह्मणवाद की क्रूरता और अंधविश्वास को उजागर करता है.

आदरणीय श्री एल.आर. बाली जी ने बाबा साहब डॉ. बी.आर. अंबेडकर के मिशन को फैलाने के लिए 1958 में भीम पत्रिका की शुरूवात की. 6 जुलाई, 2023 में 94 वर्ष की आयु में उनकी मृत्यु के बाद उनकी विरासत का अनुसरण करते हुए, हमने अक्तूबर, 2023 में भीम पत्रिका को ऑनलाइन लांच किया है.

हम जो सामग्री प्रकाशित करते हैं वह डॉ. अंबेडकर के विचारों को उजागर करने के लिए है. हम बौद्ध धर्म पर लेख और समाचार भी प्रकाशित करते हैं. इसके अलावा हम लगातार धार्मिक अल्पसंख्यकों पर हो रहे अत्याचारों की आवाज उठाने के लिए खबरों पर प्रकाश डालते हैं. हर साल हम भीम पत्रिका के प्रकाशन पर 48,500/- रुपये खर्च करते हैं. इसे जारी रखने के लिए हमें आपके वित्तीय सहयोग की आवश्यकता है क्योंकि भीम पत्रिका एकमात्र ऐसा अखबार है जो विशुद्ध रूप से अंबेडकरवाद और बौद्ध धर्म के बारे में बात करता है. हम अपने समर्थकों, मिशनरियों से अनुरोध करते हैं कि वे इस अखबार को जारी रखने के लिए पूरे दिल से सहायता करें.

Name : NAINDIP
Bank's Name : BANK OF INDIA
Account No. : 64091011002350
IFSC : BKID0006409
Bank Branch : Model Town Road, Jalandhar City (Punjab)

BHEEM PATRIKA
भीम पत्रिका
Vol.1, Issue 12

NEWS SNIPPETS

राजस्थान डायन-प्रताड़ना निवारण अधिनियम

2015 यह अधिनियम राजस्थान में डायन-प्रताड़ना की समस्या से निपटने के लिए लाया गया था. इस अधिनियम के तहत, अगर कोई व्यक्ति किसी को बुरे आशय से डायन घोषित करवाता है, तो उसे तीन साल से सात साल तक की जेल हो सकती है. **डायन प्रथा प्रतिषेध अधिनियम, 2001,** इस अधिनियम के तहत, अगर कोई व्यक्ति किसी को डायन घोषित करता है और उसे शारीरिक या मानसिक प्रताड़ित करता है, तो उसे छह महीने तक की जेल या दो हज़ार रुपये तक का जुर्माना हो सकता है.

डायन प्रताड़ना निवारण अधिनियम 2015 बने कानून के बावजूद भी हमेशा ऐसी घटनाएं असहाय महिलाओं के साथ घटित होती रहती है. जबकि शिक्षित वर्ग को समाज में फैले पाखंड एवं अंधविश्वास से लोगों को जगाने हेतु वैज्ञानिक सोच पैदा करने के लिए भारतीय संविधान के अनुच्छेद- 51A (H) के तहत हमें कर्तव्यबद्ध किया है.

ऐसी घटनाएऐं अनु. जाति/जन जनजाति, आदिवासी एवं पिछड़े वर्ग में ही घटित क्यों होती है? जबकि अवर्ण वर्ग में कभी ऐसी घटनाएं देखने-सुनने में नहीं मिलती हैं.

ऐसी घटनाओं के पीछे ऐसे कामचोर, निकम्मे, शातिर, भोपें व तांत्रिकों का हाथ रहता है, क्योंकि इसके पीछे उनका मकसद ऐसी असहाय महिला की जमीन/ जायदाद हड़पने, उसके परिवार की आपसी रंजिश का फायदा उठाने व उस गांव से उसे निष्कासित करने की साजिश रहती है और ऐसे बने नर्क जैसे गांवों में जहां कम पढ़े-लिखे व भोले-भाले लोगों के साथ-साथ व कभी-कभी तो शिक्षित वर्ग भी में इन अज्ञानी व मूर्खों की गिरफ्त में शीघ्र आ जाते हैं और ऐसी डाकण/डायन जैसी घिनौनी हरकतें/ अंधश्रद्धा वाली घटनाऐं घटित होती हैं.

यह एक सोचनीय प्रश्न है, जब अवर्ण वर्ग में ऐसी घटनाएं कभी घटित नहीं होती हैं. क्या कभी आपने नहीं सोचा कि हमारी एक त्याग-शील मां, हमें डाकण/डायन के रूप में कैसे मार देगी? क्या हमें भरोसा नहीं अपनी मां पर जिसने हमें जन्म दिया? हमारे लिए जिसने अनेक कष्ट सहते हुए हमारा लालन- पालन करते हुए हमें पढा-लिखा कर एक काबिल इंसान बनाया. अतः समाज में सेवी संस्थाओं व हम सबका एक नैतिक दायित्व बनता है कि ऐसी घटित घटनाओं में लोगों में वैज्ञानिक सोच पैदा करें व उन्हें जागरूक करें. अस्तु! हम बाबासाहेब डॉ. अंबेडकर के बताएं वैज्ञानिक रास्ते को अपनायें व अपने घर से अंधविश्वास को भगाएं ! इस लघु आलेख में प्रस्तुति- सत्य रत्न शौर्य, जोधपुर (राज.).

मान्यवर लाहौरी राम बाली जी

-सुभाष चंद मुसाफिर
-संयोजक बामसेफ

मान्यवर लाहौरी राम बाली जी 20वीं एवम् 21वी' सदी के भारत वर्ष के उन नामवर महापुरुषों में से एक हैं जिन्होंने **बाबा साहिब डा. अंबेडकर जी** के साथ और उन के बाद लाख मुश्किलों के बावजूद भी मिशन के लिए काम किया।
बाबा साहिब डा. अंबेडकर जी को वचन दिया कि उन के न रहने पर वे आजीवन उनके मिशन कारवां को आगे ले कर जाएंगे । बाबा साहिब के ज्यादा गिनती पैरोकारों के कांग्रेस में चले जाने के बावजूद भी वे भारत में बाबा साहिब और उन के द्वारा दिए गए बौद्ध धम्म को संभाले अकेले ही संघर्षरत रहे।

स्वतंत्र भारत में बाली साहिब के इलावा कोई दूसरा न होगा के जिन पर हकुमत और अपने लोगों ने 50 से ज्यादा केस दर्ज किए और उनको कोर्ट कचहरियों में बुला बुला कर परेशान किया। कोर्ट कचहरियों के चक्र और जेल की दर्दनाक ज़िल्लत को वही जान सकता है जिस ने खुद झेली हो। मैं यह इस लिए कह रहा हूं कि हकुमत ने भारत मैं गरीब मजलूमों के हक की लड़ाई लड़ने हेतु मुझ पर भी 8 वर्ष तक केस चलाए रखा था। इस लिए मैं उनके द्वारा भारत वर्ष में गरीब मजलूमों के हक अधिकार, न्याय एवम् सत्य की लड़ाई लड़ने के दृढ़ संकल्प का कायल हूं जो आजीवन निर्भकता के साथ सत्य और इंसाफ के लिए डटे रहे।

शारीरिक तौर पर भी हष्ट पुष्ट सवा छः फुट की कद काठी के साथ 90 किलो भार, रंग गोरा एवम चेहरे पे तेज, हिंदी, अंग्रेजी, उर्दू, फारसी, संस्कृत एवम मराठी भाषा के प्रकांड विद्वान उन के सामने बैठ कर बात करने हेतु भी बड़े बड़ों के पसीने छूट जाते थे ।

एक दलित बेटी के साथ हुए बलात्कार की जालंधर के एस.पी से उस बेटी के पिता के साथ शिकायत करने गए जिसका नाम पलटा था और उसके द्वारा बेटी को ही अपशब्द कहने पर उस एस.पी की उसके दफ्तर में ही जूतों से धुलाई कर डाली उसकी पिटाई की गूंज ने हकुमत के कानों के पर्दे तक फाड़ डाले हों फिर उस एस.पी द्वारा झूठा मुकद्दमा बना कर उन्हे जेल में डाल देना उस मुकद्धमे को जीत कर बा इज्जत बाहर आना, शायद ही भारत में इस तरह का कोई अन्य वृत्तांत घटा हो

continue - next page...

BHEEM PATRIKA
भीम पत्रिका
Vol.1, Issue 12

NEWS SNIPPETS

...continue - page 5

भारत में 1964 में बहुजनो के पक्ष में आर .पी.आई द्वारा किए गए संघर्ष में उन्हें अपने छोटे छोटे बच्चों राहुल, सुजाता तथा पत्नी समेत 70 दिन से ज्यादा जेल में रहना पड़ा। यह आजाद भारत के इतिहास का अब तक का सबसे बड़ा जेल भरो आंदोलन था जिसमें करीब तीन लाख से ज्यादा आंदोलनकारी जेल में गए थे। जिसमें 14 लोग शहीद हुए एक जालंधर के राम प्रकाश भी थे । बाली साहिब भारतवर्ष में अपनी लिखतों और उन लिखतों पर अडिग रहने के लिए भारत वर्ष में 'ए ग्रेट लीजेंड ऑफ इंडिया' (भारत के महानायक) 'बाली साहिब द ग्रेट' के नाम से सदियों तक याद किए जाते रहेंगे ।

बाली साहब ने 1967 में जिस जाति हंकारी कांग्रेसी केंद्रीय मंत्री स्वर्ण सिंह के विरुद्ध कोई चुनाव में जनरल सीट से पर्चा तक नही भरता था उसके विरुद्ध आर.पी.आई से चुनाव लड़ कर एक लाख से ज़्यादा वोट लेना और इस जाति हंकारी व्यक्ति को नाकों चने चबा देना ये सब बाली साहिब ही कर सकते थे। जम्मू कश्मीर से कन्याकुमारी तक पूरे भारत वर्ष में ट्रेन से बाबा साहिब के मिशन के प्रचार को जाना और अपने भाषणों से जनसमूह में जोश भर देना बाली साहिब के व्यक्तित्व की विशेषता थी।

उनके द्वारा 100 से ज्यादा किताबें जिन में बहुचर्चित रंगीला गांधी, हिंदू इज्म धर्म या कलंक ?, डा. अंबेडकर कलम का कमाल तथा डा. अंबेडकर जीवन और मिशन आदि अत्यंत ही प्रसिद्ध हैं । इनमे से डा. अंबेडकर जीवन और मिशन हिंदी, अंग्रेजी के बाद जर्मन भाषा में भी छप चुकी है। इसके अलावा यह पुस्तक पंजाब सरकार की ओर से पंजाब की तमाम यूनिवर्सिटिययों के लिए मान्यता प्राप्त है उनके जाने के उपरांत आज चार विद्यार्थी बाली साहब के जीवन और संघर्ष पर पी.एच.डी कर रहे हैं। प्रसिद्ध अंबेडकरवादी प्रोफेसर तथा चिंतन प्रोफेसर सूर्य येंगडे (हारवार्ड यूनिवर्सिटी अमेरिका)की तरफ से बाली साहब के नाम पर नेशनल अवार्ड जिसका नाम एल.आर.बाली राष्ट्रीय पुरस्कार है जो कि पहला अवार्ड गुजरात के प्रसिद्ध समाज चिंतक जिग्नेश मेवानी को दिया गया है ।

बाली साहिब का सबसे बड़ा योगदान जालंधर का अंबेडकर भवन यहां बाबा साहिब ने 27 अक्तूबर 1951 में भाषण दिया था उस जगह को आपने 1963 में सेठ कर्म चांद बाठ तथा अन्य साथियों के सहयोग और गरीब जनता के एक-एक रुपए से खरीद कर उत्तरी भारत का सब से प्रख्यात केंद्र 1972 से बाली साहब द्वारा बनाया गया । आज अंबेडकर भवन ट्रस्ट ही इस भवन की बाखूबी देखरेख कर रहा है यहां से बाबा साहिब के निरोल मिशन की विचारधारा पूरे भारत में ही नहीं वल्कि पूरे विश्व भर में प्रचारित की जाती है।

बाली साहिब अपने बेबाक भाषण, निर्भीक लेखन, सत्य, करुणा व मैत्री के प्रख्यात पुरोधा थे। उनके दुश्मन भी उनकी प्रतिभा के कायल थे बड़े-बड़े जोधा भी उनका लोहा मानते थे । हकुमत हमेशा उनके द्वारा निकाली जाने वाली पत्रिका 'भीम पत्रिका' से डरी रहती थी। बाली साहब के जाने के बाद भीम पत्रिका को उनके बड़े बेटे डा.राहुल बाली आज ई.पेपर के रूप में निकाल रहे हैं। यह अखबार आज भी पूरी दुनिया में बाबा साहब के मिशन का प्रचार प्रसार कर रही है।

यहां तक कि जब सचखंड बल्लां के महापुरुषों पर विदेश वियाना में जान लेवा हमला हुआ और जिस हमले में महान संत श्री रामानंद जी महाराज शहीद हो गए । बड़े महाराज संत निरंजन दास जी गोलियों से बुरी तरह जख्मी हुए इसके विरोध में पंजाब में भडकी हिंसा आगजनी में जालंधर के पांच लोग शहीद हो गए , हकुमत ने पंजाब समेत पूरे भारत में हुए भीषण विरोध को पुलिस प्रशासन द्वारा दबा दिया । तब पूरे भारत में संत मिशन को चलाने वाले डेरों ने भी इस अत्याचार के विरुद्ध आवाज नहीं उठाई तब बाली साहिब ने पंजाब और आस पास के प्रांतों से मिशनरी साथियों को बुला कर जालंधर के देशभक्त यादगार हाल में एक बहुत बड़ी जनसभा का आयोजन किया इस श्रद्धांजलि समागम मे शाहिद रामानंद महाराज जी के पिता श्री महंगा राम जी को बाली जी ने सम्मानित किया । श्री चरण दास संधू जी के माध्यम से इस मंच से मुझे भी संबोधन करने का अवसर मिला । श्री संधू साहिब इसी मंच का संचालन भी कर रहे थे । बाली साहिब ने इस कार्यक्रम में मंच से दुष्ट हाकम को अत्याचार बंद करने के लिए चेताया। हालांकि बाली साहिब भारत वर्ष में पनपे किसी भी तरह के डेरा वाद के सख्त खिलाफ थे फिर भी अगर किसी पर अत्याचार हुआ हो या कोई बेइंसाफी हुई हो तो वो दुष्ट हाकम के विरुद्ध संघर्ष करने में सब से आगे चट्टान की भांति खड़े रहते थे ।

अंत में ये शेयर उनकी (बाली साहिब)

"ना मैं गिरा ना मेरे हौसलों के मीनार गिरे ,
मगर मुझको गिराने में कई लोग बार-बार गिरे ।।"

बाली साहिब ने अपने पूरे जीवन को तथागत गौतमबुद्ध , सतगुरु रविदास जी, सतगुरु कबीर साहिब एवम बाबा साहिब डा. भीम राव अम्बेडकर जी के द्वारा चलाए गए आंदोलन हेतु समर्पित कर स्वयं को उन्ही महापुरुषों की श्रेणी में ला खड़ा किया। उन के संघर्ष को भारत वर्ष के जन जन तक पहुंचाने हेतु उनके चित्र को अन्य महापुरुषों के साथ एक कैलेंडर के रूप में जारी किया जा रहा है। सभी भारतवासियों से अपील है कि इसे ज्यादा से ज्यादा आम जनमानस तक पहुंचाया जाए। हमारे पास इस का भरपूर स्टॉक है साथी हम से संपर्क कर यह कलैंडर मंगवा सकते हैं ।

Subhash Chand Musafir
Coordinator BAMCEF
(Backward (SCSTOBC) And Minorities (SCM) Employees Federation), Cobra (Confederation Of Backward(SCSTOBC) & Religious Minorities(SCM) Associations And President ASTBRA (All SC/ST/OBC & RM Employees Association HP.

उस के दुश्मन हैं बहुत आदमी अच्छा होगा

उस के दुश्मन हैं बहुत आदमी अच्छा होगा
वो भी मेरी ही तरह शहर में तन्हा होगा

इतना सच बोल कि होंटों का तबस्सुम न बुझे
रौशनी ख़त्म न कर आगे अँधेरा होगा

तना सच बोल कि होंटों का तबस्सुम न बुझे
रौशनी ख़त्म न कर आगे अँधेरा होगा

प्यास जिस नहर से टकराई वो बंजर निकली
जिस को पीछे कहीं छोड़ आए वो दरिया होगा

मिरे बारे में कोई राय तो होगी उस की
उस ने मुझ को भी कभी तोड़ के देखा होगा

एक महफ़िल में कई महफ़िलें होती हैं शरीक
जिस को भी पास से देखोगे अकेला होगा
-निदा फ़ाज़ली

BHEEM PATRIKA
भीम पत्रिका
Vol.1, Issue 12

ਇਤਿਹਾਸਿਕ ਸਥਾਨ ਅੰਬੇਡਕਰ ਭਵਨ ਜਲੰਧਰ ਵਿਖੇ ਲੱਗੇਗਾ ਬਾਬਾ ਸਾਹਿਬ ਡਾ. ਅੰਬੇਡਕਰ ਦਾ ਬੁੱਤ

ਜਲੰਧਰ 10 ਸਤੰਬਰ (ਜੇ ਐੱਸ. ਸੋਢੀ)

ਅੰਬੇਡਕਰ ਭਵਨ ਟਰੱਸਟ (ਰਜਿ.), ਜਲੰਧਰ ਦੇ ਵਿੱਤ ਸਕੱਤਰ ਬਲਦੇਵ ਰਾਜ ਭਾਰਦਵਾਜ ਨੇ ਇੱਕ ਪ੍ਰੈਸ ਬਿਆਨ ਜਾਰੀ ਕਰਕੇ ਕਿਹਾ ਕਿ ਅੰਬੇਡਕਰ ਮਿਸ਼ਨ ਸੁਸਾਇਟੀ ਵੱਲੋਂ 14 ਅਕਤੂਬਰ 2024 ਨੂੰ ਇਤਿਹਾਸਕ ਅਸਥਾਨ ਅੰਬੇਡਕਰ ਭਵਨ , ਡਾ. ਅੰਬੇਡਕਰ ਮਾਰਗ, ਜਲੰਧਰ ਵਿਖੇ ਕਰਵਾਏ ਜਾ ਰਹੇ ਵਿਸ਼ਾਲ 'ਧੱਮ ਚੱਕਰ ਪ੍ਰਵਰਤਨ ਦਿਵਸ' ਸਮਾਗਮ ਵਿੱਚ ਡਾ.ਐਚ.ਐਲ.ਵਿਰਦੀ ਲੰਡਨ (ਯੂ.ਕੇ.) ਮੁੱਖ ਮਹਿਮਾਨ ਵਜੋਂ ਸ਼ਿਰਕਤ ਕਰ ਰਹੇ ਹਨ। ਇਸ ਦੇ ਨਾਲ ਹੀ ਐਨ.ਆਰ.ਆਈ. ਸ੍ਰੀ ਹੰਸ ਰਾਜ ਸਾਂਪਲਾ ਸਮਾਗਮ ਵਿੱਚ ਵਿਸ਼ੇਸ਼ ਮਹਿਮਾਨ ਹੋਣਗੇ। ਇਨ੍ਹਾਂ ਤੋਂ ਇਲਾਵਾ ਭਿੱਖੂ-ਸੰਘ ਦੁਆਰਾ ਧੰਮ ਦੇਸ਼ਨਾ ਦਿੱਤੀ ਜਾਵੇਗੀ ਅਤੇ ਹੋਰ ਵਿਦਵਾਨ ਵੀ ਆਪਣੇ ਵਿਚਾਰ ਪੇਸ਼ ਕਰਨਗੇ। ਇਹ ਫੈਸਲਾ ਅੰਬੇਡਕਰ ਮਿਸ਼ਨ ਸੁਸਾਇਟੀ ਦੀ ਕਾਰਜਕਾਰਨੀ ਕਮੇਟੀ ਦੀ ਮੀਟਿੰਗ, ਜੋ ਸ੍ਰੀ ਚਰਨ ਦਾਸ ਸੰਧੂ ਦੀ ਪ੍ਰਧਾਨਗੀ ਹੇਠ ਹੋਈ, ਵਿੱਚ ਲਿਆ ਗਿਆ। ਯਾਦ ਰਹੇ ਕਿ 14 ਅਕਤੂਬਰ 1956 ਨੂੰ ਭਾਰਤੀ ਸੰਵਿਧਾਨ ਦੇ ਮੁੱਖ ਉਸਰਈਏ, ਲਤਾੜੇ ਤੇ ਪਿਛਾੜੇ ਹੋਏ ਲੋਕਾਂ ਦੇ ਮਸੀਹਾ, ਨਾਰੀ ਜਾਤੀ ਦੇ ਮੁਕਤੀਦਾਤਾ ਬਾਬਾ ਸਾਹਿਬ ਡਾ. ਭੀਮ ਰਾਓ ਅੰਬੇਡਕਰ ਨੇ ਹਿੰਦੂ ਧਰਮ ਨੂੰ ਤਿਆਗ ਕੇ ਆਪਣੇ ਲੱਖਾਂ ਪੈਰੋਕਾਰਾਂ ਨਾਲ ਨਾਗਪੁਰ ਵਿਖੇ ਬੁੱਧ ਧੱਮ ਦੀ ਦੀਕਸ਼ਾ ਲਈ ਸੀ। ਇਸ ਦਿਨ ਨੂੰ, ਭਾਵ 14 ਅਕਤੂਬਰ ਨੂੰ ਅੰਬੇਡਕਰ ਮਿਸ਼ਨ ਸੁਸਾਇਟੀ ਪੰਜਾਬ (ਰਜਿ.) ਹਰ ਸਾਲ 'ਧੱਮ ਚੱਕਰ ਪ੍ਰਵਰਤਨ ਦਿਵਸ' ਦੇ ਰੂਪ ਵਿੱਚ ਅੰਬੇਡਕਰ ਭਵਨ ਜਲੰਧਰ ਵਿਖੇ ਬੜੀ ਧੂਮ-ਧਾਮ ਅਤੇ ਸ਼ਰਧਾ ਨਾਲ ਵਿਸ਼ਾਲ ਪੱਧਰ ਤੇ ਪਿਛਲੇ ਲੰਮੇ ਸਮੇਂ ਤੋਂ ਮਨਾਉਂਦੀ ਹੈ। ਭਾਰਦਵਾਜ ਨੇ ਕਿਹਾ ਕਿ ਇਸ ਸਮਾਗਮ ਵਿੱਚ ਅੰਬੇਡਕਰ ਭਵਨ ਟਰੱਸਟ (ਰਜਿ.) ਜਲੰਧਰ, ਆਲ ਇੰਡੀਆ ਸਮਤਾ ਸੈਨਿਕ ਦਲ (ਰਜਿ.) ਪੰਜਾਬ ਯੂਨਿਟ ਅਤੇ ਹੋਰ ਅੰਬੇਡਕਰ ਮਿਸ਼ਨਰੀ ਤੇ ਬੁੱਧਿਸਟ ਸਭਾ-ਸੁਸਾਇਟੀਆਂ ਸਹਿਯੋਗੀ ਹੋਣਗੀਆਂ। ਮੀਟਿੰਗ ਵਿੱਚ ਸਰਬ ਸ੍ਰੀ ਪ੍ਰੋਫੈਸਰ ਬਲਬੀਰ, ਡਾ. ਜੀਸੀ ਕੌਲ, ਡਾ. ਚਰਨਜੀਤ ਸਿੰਘ, ਬਲਦੇਵ ਰਾਜ ਭਾਰਦਵਾਜ, ਕਮਲਸ਼ੀਲ ਬਾਲੀ, ਮਹਿੰਦਰ ਸੰਧੂ, ਜਸਵਿੰਦਰ ਵਰਿਆਣਾ, ਪਰਮਿੰਦਰ ਸਿੰਘ ਖੁੱਤਨ, ਤਿਲਕ ਰਾਜ ਅਤੇ ਰਾਜਕੁਮਾਰ ਹਾਜ਼ਰ ਸਨ।

ਬਲਦੇਵ ਰਾਜ ਭਾਰਦਵਾਜ
ਜਨਰਲ ਸਕੱਤਰ
ਅੰਬੇਡਕਰ ਮਿਸ਼ਨ ਸੋਸਾਇਟੀ
ਪੰਜਾਬ (ਰਜਿ.), ਜਲੰਧਰ।

---

4 17/09/2024 ਖਬਰਾਂ www.samajweekly.com

'ਧੱਮ ਚੱਕਰ ਪ੍ਰਵਰਤਨ ਦਿਵਸ' ਸਮਾਗਮ 'ਚ ਡਾ. ਐਚ. ਐਲ. ਵਿਰਦੀ ਲੰਡਨ ਹੋਣਗੇ ਮੁੱਖ ਮਹਿਮਾਨ ਅਤੇ ਐਨ.ਆਰ.ਆਈ. ਹੰਸਰਾਜ ਸਾਂਪਲਾ ਵਿਸ਼ੇਸ਼ ਮਹਿਮਾਨ

ਜਲੰਧਰ (ਸਮਾਜ ਵੀਕਲੀ): ਅੰਬੇਡਕਰ ਮਿਸ਼ਨ ਸੁਸਾਇਟੀ ਪੰਜਾਬ (ਰਜਿ.) ਦੇ ਜਨਰਲ ਸਕੱਤਰ ਬਲਦੇਵ ਰਾਜ ਭਾਰਦਵਾਜ ਨੇ ਇੱਕ ਪ੍ਰੈਸ ਬਿਆਨ ਜਾਰੀ ਕਰਕੇ ਕਿਹਾ ਕਿ ਅੰਬੇਡਕਰ ਮਿਸ਼ਨ ਸੁਸਾਇਟੀ ਵੱਲੋਂ 14 ਅਕਤੂਬਰ 2024 ਨੂੰ ਇਤਿਹਾਸਕ ਅਸਥਾਨ ਅੰਬੇਡਕਰ ਭਵਨ , ਡਾ. ਅੰਬੇਡਕਰ ਮਾਰਗ, ਜਲੰਧਰ ਵਿਖੇ ਕਰਵਾਏ ਜਾ ਰਹੇ ਵਿਸ਼ਾਲ 'ਧੱਮ ਚੱਕਰ ਪ੍ਰਵਰਤਨ ਦਿਵਸ' ਸਮਾਗਮ ਵਿੱਚ ਡਾ.ਐਚ.ਐਲ.ਵਿਰਦੀ ਲੰਡਨ (ਯੂ.ਕੇ.) ਮੁੱਖ ਮਹਿਮਾਨ ਵਜੋਂ ਸ਼ਿਰਕਤ ਕਰ ਰਹੇ ਹਨ। ਇਸ ਦੇ ਨਾਲ ਹੀ ਐਨ.ਆਰ.ਆਈ. ਸ੍ਰੀ ਹੰਸ ਰਾਜ ਸਾਂਪਲਾ ਸਮਾਗਮ ਵਿੱਚ ਵਿਸ਼ੇਸ਼ ਮਹਿਮਾਨ ਹੋਣਗੇ। ਇਨ੍ਹਾਂ ਤੋਂ ਇਲਾਵਾ ਭਿੱਖੂ-ਸੰਘ ਦੁਆਰਾ ਧੰਮ ਦੇਸ਼ਨਾ ਦਿੱਤੀ ਜਾਵੇਗੀ ਅਤੇ ਹੋਰ ਵਿਦਵਾਨ ਵੀ ਆਪਣੇ ਵਿਚਾਰ ਪੇਸ਼ ਕਰਨਗੇ। ਇਹ ਫੈਸਲਾ ਅੰਬੇਡਕਰ ਮਿਸ਼ਨ ਸੁਸਾਇਟੀ ਦੀ ਕਾਰਜਕਾਰਨੀ ਕਮੇਟੀ ਦੀ ਮੀਟਿੰਗ, ਜੋ ਸ੍ਰੀ ਚਰਨ ਦਾਸ ਸੰਧੂ ਦੀ ਪ੍ਰਧਾਨਗੀ ਹੇਠ ਹੋਈ, ਵਿੱਚ ਲਿਆ ਗਿਆ। ਯਾਦ ਰਹੇ ਕਿ 14 ਅਕਤੂਬਰ 1956 ਨੂੰ ਭਾਰਤੀ ਸੰਵਿਧਾਨ ਦੇ ਮੁੱਖ ਉਸਰਈਏ, ਲਤਾੜੇ ਤੇ ਪਿਛਾੜੇ ਹੋਏ ਲੋਕਾਂ ਦੇ ਮਸੀਹਾ, ਨਾਰੀ ਜਾਤੀ ਦੇ ਮੁਕਤੀਦਾਤਾ ਬਾਬਾ ਸਾਹਿਬ ਡਾ. ਭੀਮ ਰਾਓ ਅੰਬੇਡਕਰ ਨੇ ਹਿੰਦੂ ਧਰਮ ਨੂੰ ਤਿਆਗ ਕੇ ਆਪਣੇ ਲੱਖਾਂ ਪੈਰੋਕਾਰਾਂ ਨਾਲ ਨਾਗਪੁਰ ਵਿਖੇ ਬੁੱਧ ਧੱਮ ਦੀ ਦੀਕਸ਼ਾ ਲਈ ਸੀ। ਇਸ ਦਿਨ ਨੂੰ, ਭਾਵ 14 ਅਕਤੂਬਰ ਨੂੰ ਅੰਬੇਡਕਰ ਮਿਸ਼ਨ ਸੁਸਾਇਟੀ ਪੰਜਾਬ (ਰਜਿ.) ਹਰ ਸਾਲ 'ਧੱਮ ਚੱਕਰ ਪ੍ਰਵਰਤਨ ਦਿਵਸ' ਦੇ ਰੂਪ ਵਿੱਚ ਅੰਬੇਡਕਰ ਭਵਨ ਜਲੰਧਰ ਵਿਖੇ ਬੜੀ ਧੂਮ-ਧਾਮ ਅਤੇ ਸ਼ਰਧਾ ਨਾਲ ਵਿਸ਼ਾਲ ਪੱਧਰ ਤੇ ਪਿਛਲੇ ਲੰਮੇ ਸਮੇਂ ਤੋਂ ਮਨਾਉਂਦੀ ਹੈ। ਭਾਰਦਵਾਜ ਨੇ ਕਿਹਾ ਕਿ ਇਸ ਸਮਾਗਮ ਵਿੱਚ ਅੰਬੇਡਕਰ ਭਵਨ ਟਰੱਸਟ (ਰਜਿ.) ਜਲੰਧਰ, ਆਲ ਇੰਡੀਆ ਸਮਤਾ ਸੈਨਿਕ ਦਲ (ਰਜਿ.) ਪੰਜਾਬ ਯੂਨਿਟ ਅਤੇ ਹੋਰ ਅੰਬੇਡਕਰ ਮਿਸ਼ਨਰੀ ਤੇ ਬੁੱਧਿਸਟ ਸਭਾ-ਸੁਸਾਇਟੀਆਂ ਸਹਿਯੋਗੀ ਹੋਣਗੀਆਂ। ਮੀਟਿੰਗ ਵਿੱਚ ਸਰਬ ਸ੍ਰੀ ਪ੍ਰੋਫੈਸਰ ਬਲਬੀਰ, ਡਾ. ਜੀਸੀ ਕੌਲ, ਡਾ. ਚਰਨਜੀਤ ਸਿੰਘ, ਬਲਦੇਵ ਰਾਜ ਭਾਰਦਵਾਜ, ਕਮਲਸ਼ੀਲ ਬਾਲੀ, ਮਹਿੰਦਰ ਸੰਧੂ, ਜਸਵਿੰਦਰ ਵਰਿਆਣਾ, ਪਰਮਿੰਦਰ ਸਿੰਘ ਖੁੱਤਨ, ਤਿਲਕ ਰਾਜ ਅਤੇ ਰਾਜਕੁਮਾਰ ਹਾਜ਼ਰ ਸਨ।

ਡਾ. ਐਚ. ਐਲ. ਵਿਰਦੀ ਲੰਡਨ, ਯੂਕੇ ਅਤੇ ਐਨ.ਆਰ.ਆਈ. ਹੰਸ ਰਾਜ ਸਾਂਪਲਾ ਦੀ ਫਾਈਲ ਫੋਟੋ।

ਬਲਦੇਵ ਰਾਜ ਭਾਰਦਵਾਜ
ਜਨਰਲ ਸਕੱਤਰ
ਅੰਬੇਡਕਰ ਮਿਸ਼ਨ ਸੋਸਾਇਟੀ
ਪੰਜਾਬ (ਰਜਿ.), ਜਲੰਧਰ।

ਆਈ.ਆਰ.ਟੀ.ਐਸ.ਏ. ਦੁਆਰਾ "ਆਰ ਸੀ ਐੱਫ ਵਿੱਚ ਇੰਜੀਨੀਅਰ-ਡੇ" ਮਨਾਇਆ ਗਿਆ

ਬਾਬਾ ਸਾਹਿਬ ਡਾ: ਅੰਬੇਡਕਰ ਦਾ ਮਿਸ਼ਨ ਬਿਜਲੀ ਦੀ ਨੰਗੀ ਤਾਰ ਵਾਂਗ ਹੈ। ਇਸ ਉੱਤੇ ਤੁਰਨ ਲਈ ਇੱਕ ਬੁੱਧੀਮਾਨ ਆਦਮੀ ਦੀ ਅਕਲ ਅਤੇ ਸ਼ੇਰ ਦੀ ਹਿੰਮਤ ਹੋਣੀ ਚਾਹੀਦੀ ਹੈ। ਇੱਕ ਸੱਚਾ ਅੰਬੇਡਕਰਵਾਦੀ ਬਣਨ ਲਈ ਤੁਹਾਡੇ ਵਿੱਚ ਇਮਾਨਦਾਰੀ, ਬੇਦਾਗ ਚਰਿੱਤਰ ਅਤੇ ਮਿਸ਼ਨ ਪ੍ਰਤੀ ਇਮਾਨਦਾਰੀ ਦੀ ਲੋੜ ਹੈ- ਐਲ.ਆਰ.ਬਾਲੀ

ਅੰਬੇਡਕਰ ਭਵਨ ਟਰੱਸਟ (ਰਜਿ.), ਦੁਆਰਾ ਡਾ. ਅੰਬੇਡਕਰ ਦੀ ਕ੍ਰਾਂਤੀ ਨੂੰ ਜਾਰੀ ਰੱਖਣ ਲਈ ONGC ਤੋਂ ਵਿਦਿਅਕ ਪ੍ਰੋਜੈਕਟ (ਵਿਦਿਆਰਥੀ ਮੈਰਿਟ ਸਕਾਲਰਸ਼ਿਪ) ਦੀਆਂ ਅੰਬੇਡਕਰਵਾਦੀ ਯੋਜਨਾਵਾਂ ਦੀ ਤਿਆਰੀ

ਜਲੰਧਰ (ਸਮਾਜ ਵੀਕਲੀ) ਅੰਬੇਡਕਰ ਭਵਨ ਟਰੱਸਟ (ਰਜਿ.) ਦੇ ਅਧਿਕਾਰੀਆਂ ਸ੍ਰੀ ਸੋਹਨ ਲਾਲ (ਚੇਅਰਮੈਨ), ਡਾ.ਜੀ.ਸੀ. ਕੌਲ (ਜਨਰਲ ਸਕੱਤਰ), ਬਲਦੇਵ ਰਾਜ ਭਾਰਦਵਾਜ (ਵਿੱਤ ਸਕੱਤਰ), ਚਰਨ ਦਾਸ ਸੰਧੂ, ਮਹਿੰਦਰ ਸੰਧੂ, ਗੌਤਮ ਅੰਬੇਡਕਰ ਬੌਧ ਅਤੇ ਪ੍ਰੋ: ਅਰਿੰਦਰ ਸਿੰਘ ਨੇ ਓ.ਐਨ.ਜੀ.ਸੀ (ਤੇਲ ਅਤੇ ਕੁਦਰਤੀ ਗੈਸ ਕਾਰਪੋਰੇਸ਼ਨ) ਦੇ ਮੈਰਿਟ ਵਜ਼ੀਫ਼ੇ ਦਾ ਅੰਬੇਡਕਰ ਭਵਨ ਟਰੱਸਟ (ਰਜਿ.), ਜਲੰਧਰ, ਪੰਜਾਬ ਦੁਆਰਾ ਸਾਲ 2024-2025 ਲਈ ਪੋਸਟਰ ਜਾਰੀ ਕਰਨ ਦਾ ਸਨਮਾਨ ਹਾਸਿਲ ਨੇ ਕੀਤਾ। ਇਸ ਟਰੱਸਟ ਦੀ ਸਥਾਪਨਾ ਮਰਹੂਮ ਸ੍ਰੀ ਲਾਹੌਰੀ ਰਾਮ ਬਾਲੀ ਜੀ, ਜੋ ਇੱਕ ਉੱਘੇ ਅੰਬੇਡਕਰਵਾਦੀ, ਮਹਾਨ ਲੇਖਕ, ਇੱਕ ਵਿਵੇਕਸ਼ੀਲ ਚਿੰਤਕ, ਮਾਰਗਦਰਸ਼ਕ, ਇੱਕ ਸੱਚੇ ਬੋਧੀ ਅਤੇ ਨਿਰਸਵਾਰਥ ਸਮਾਜ ਸੇਵਕ ਸਨ, ਨੇ 1972 ਵਿੱਚ ਕੀਤੀ। ਇਹ ਉਹੀ ਇਤਿਹਾਸਕ ਸਥਾਨ ਹੈ ਜਿੱਥੇ 27 ਅਕਤੂਬਰ, 1951 ਨੂੰ ਬਾਬਾ ਸਾਹਿਬ ਡਾ. ਅੰਬੇਡਕਰ ਨੇ ਪੰਜਾਬ ਦੇ ਲੱਖਾਂ ਲੋਕਾਂ ਨੂੰ ਆ ਕੇ ਸੰਬੋਧਨ ਕੀਤਾ ਸੀ ਅਤੇ ਬਾਲੀ ਸਾਹਿਬ ਨੇ ਸ੍ਰੀ ਕਰਮ ਚੰਦ ਬਾਠ ਦੇ ਸਹਿਯੋਗ ਨਾਲ ਇਹ ਭੂਮੀ ਖਰੀਦੀ ਅਤੇ ਆਪਣੇ ਸਾਥੀ ਟਰੱਸਟੀਆਂ ਦੇ ਸਹਿਯੋਗ ਨਾਲ ਇੱਥੇ ਸ਼ਾਨਦਾਰ ਅੰਬੇਡਕਰ ਭਵਨ ਦਾ ਨਿਰਮਾਣ ਕੀਤਾ।

ਅੰਬੇਡਕਰ ਭਵਨ ਟਰੱਸਟ ਦੇ ਅਧਿਕਾਰੀ 'ਵਿਦਿਆਰਥੀ ਮੈਰਿਟ ਸਕਾਲਰਸ਼ਿਪ' ਦਾ ਪੋਸਟਰ ਜਾਰੀ ਕਰਦੇ ਹੋਏ।

ਇਸ ਦਾ ਪ੍ਰਬੰਧ ਅੰਬੇਡਕਰ ਭਵਨ ਟਰੱਸਟ (ਰਜਿ.) ਵੱਲੋਂ ਕੀਤਾ ਜਾ ਰਿਹਾ ਹੈ। ਸਤਿਕਾਰਯੋਗ ਨਾਗਸੇਨ ਸੋਨਾਰੇ ਰਿਟਾ. ONGC ਦੇ DGM - ਤੇਲ ਅਤੇ ਕੁਦਰਤੀ ਗੈਸ ਕਾਰਪੋਰੇਸ਼ਨ ਨੇ ਵਿਦਿਆਰਥੀਆਂ ਲਈ ਇਸ ਮੈਰਿਟ ਵਜ਼ੀਫ਼ੇ ਨੂੰ ਸ੍ਰੀ ਗੌਤਮ ਅੰਬੇਡਕਰ ਬੌਧ ।ਤਰਕਸ਼ੀਲ, ਗਤੀਸ਼ੀਲ ਸਮਾਜਿਕ ਕਾਰਕੁਨ, ਪਟੀਸ਼ਨਕਰਤਾ ਅਤੇ "ਇਨਕਲਾਬੀ ਅੰਬੇਡਕਰ ਅਤੇ ਅੰਬੇਡਕਰਵਾਦ", "ਮਿਸ਼ਨ ਸੰਵਿਧਾਨ ਬਚਾਓ " ਅਤੇ ਇਨਕਲਾਬੀ ਬੁੱਧਾ ਅਤੇ ਬੋਧੀਸਤਵ ਅੰਬੇਡਕਰ ਤਰਕਸ਼ੀਲ ਇੰਟਰਨੈਸ਼ਨਲ ਐਡਵਾਂਸਡ ਕ੍ਰਿਪਟੋਗ੍ਰਾਫਿਕ ਟ੍ਰਾਂਸਫਾਰਮੇਸ਼ਨ ਰਿਸਰਚ ਫਾਊਂਡੇਸ਼ਨ ਦੇ ਸੰਸਥਾਪਕ, ਅਤੇ ਬਚਪਨ ਤੋਂ ਹੀ ਅੰਬੇਡਕਰ ਭਵਨ ਅਤੇ ਬੁੱਧ ਵਿਹਾਰ ਵਿਖੇ ਬਹੁਤ ਸਰਗਰਮ ਅੰਬੇਡਕਰਵਾਦੀ, ਉਹ ਇੱਕ M.Tech ਰਿਸਰਚ ਸਕਾਲਰ ਅਤੇ ਪੇਸ਼ੇਵਰ ਤੌਰ 'ਤੇ ਚਾਂਚਾਗਤ ਇੰਜੀਨੀਅਰ ਹੈ, +6 ਅੰਤਰਰਾਸ਼ਟਰੀ ਕਾਨਫਰੰਸਾਂ, +10 ਅੰਤਰਰਾਸ਼ਟਰੀ ਖੋਜ ਜਰਨਲ, +31 ਅੰਤਰਰਾਸ਼ਟਰੀ ਪ੍ਰਭਾਵ ਫੈਕਟਰ ਪੁਆਇੰਟਸ ਅਤੇ ਵੱਖ-ਵੱਖ ਪੇਟੈਂਟ, (Oricd ID - https://oricd.org/0000-0003-2728-5846)॥ ਰਾਹੀਂ ਇੱਕ ਵੱਡਮੁੱਲੀ ਜਾਣਕਾਰੀ ਵਜੋਂ ਅੱਗੇ ਵਧਾਇਆ। ਸਤਿਕਾਰਯੋਗ ਨਾਗਸੇਨ ਸੋਨਾਰੇ, ਰਿਟਾ. ONGC ਦੇ DGM - ਤੇਲ ਅਤੇ ਕੁਦਰਤੀ ਗੈਸ ਕਾਰਪੋਰੇਸ਼ਨ ਨੇ ਗੌਤਮ ਅੰਬੇਡਕਰ ਬੌਧ ਨੂੰ ਪੰਜਾਬ ਰਾਜ ਕੋਆਰਡੀਨੇਟਰ ਵਜੋਂ ਚੁਣਿਆ ਅਤੇ ਅੰਬੇਡਕਰ ਭਵਨ ਟਰੱਸਟ (ਰਜਿ.) ਦੇ ਨਾਲ ਅੰਬੇਡਕਰਾਈਟ ਐਜੂਕੇਸ਼ਨਲ ਰੈਵੋਲਿਊਸ਼ਨ ਨੂੰ ਚਲਾਉਣ ਲਈ ਹੋਰ ਅਧਿਕਾਰਤ ਅਹੁਦਾ ਚੁਣਿਆ ਜੋ ਬਾਬਾ ਸਾਹਿਬ ਬੀ.ਆਰ. ਅੰਬੇਡਕਰ (ਭਾਰਤੀ ਸੰਵਿਧਾਨ ਦੇ ਪਿਤਾਮਾ) ਦੀ ਵਿਚਾਰਧਾਰਾ "ਪੇ ਬੈਕ ਟੂ ਸੋਸਾਇਟੀ" 'ਤੇ ਆਧਾਰਿਤ ਵਿਦਿਆਰਥੀ ਵਿਦਿਅਕ ਭਵਿੱਖਮੁਖੀ ਪ੍ਰੋਜੈਕਟਾਂ 'ਤੇ ਕੇਂਦਰਿਤ ਹੈ। ਇਹ ਜਾਣਕਾਰੀ ਅੰਬੇਡਕਰ ਭਵਨ ਟਰੱਸਟ (ਰਜਿ.) ਜਲੰਧਰ ਦੇ ਵਿੱਤ ਸਕੱਤਰ ਬਲਦੇਵ ਰਾਜ ਭਾਰਦਵਾਜ ਨੇ ਪ੍ਰੈੱਸ ਬਿਆਨ ਰਾਹੀਂ ਦਿੱਤੀ।

ਬਲਦੇਵ ਰਾਜ ਭਾਰਦਵਾਜ
ਵਿੱਤ ਸਕੱਤਰ
ਭਵਨ ਟਰੱਸਟ (ਰਜਿ.),
ਜਲੰਧਰ

BHEEM PATRIKA
भीम पत्रिका
Vol.1, Issue 12

www.samajweekly.com ਖਬਰਾਂ 22/09/2024 5

ਅੰਬੇਡਕਰ ਭਵਨ ਅੰਬੇਡਕਰੀ ਵਿਚਾਰਧਾਰਾ ਦਾ ਪ੍ਰਮੁੱਖ ਪ੍ਰੇਰਨਾ ਸਰੋਤ

ਲੋਕ ਚੇਤਨਾ ਪੈਦਾ ਕਰਨ ਵਿੱਚ ਅੰਬੇਡਕਰ ਭਵਨ ਦਾ ਇਤਿਹਾਸਿਕ ਯੋਗਦਾਨ: ਸੁਭਾਸ਼ ਮੁਸਾਫਰ

ਸ੍ਰੀ ਸੁਭਾਸ਼ ਮੁਸਾਫਰ ਦਾ ਸਨਮਾਨ ਕਰਦੇ ਸੰਸਥਾਵਾਂ ਦੇ ਆਗੂ।

ਜਲੰਧਰ (ਸਮਾਜ ਵੀਕਲੀ) ਅੰਬੇਡਕਰ ਮਿਸ਼ਨ ਸੁਸਾਇਟੀ ਪੰਜਾਬ (ਰਜਿ.) ਦੇ ਜਨਰਲ ਸਕੱਤਰ ਬਲਦੇਵ ਰਾਜ ਭਾਰਦਵਾਜ ਨੇ ਇੱਕ ਪ੍ਰੈਸ ਬਿਆਨ ਜਾਰੀ ਕਰਕੇ ਕਿਹਾ ਕਿ ਹਿਮਾਚਲ ਪ੍ਰਦੇਸ਼ ਤੋਂ ਆਏ ਅੰਬੇਡਕਰ ਮਿਸ਼ਨ ਦੇ ਅਣਥੱਕ ਯੋਧੇ ਸੁਭਾਸ਼ ਚੰਦ ਮੁਸਾਫਰ ਦੇ ਸਨਮਾਨ ਵਿੱਚ ਅੰਬੇਡਕਰ ਮਿਸ਼ਨ ਸੁਸਾਇਟੀ ਵੱਲੋਂ ਅੰਬੇਡਕਰ ਭਵਨ ਵਿਖੇ ਇੱਕ ਸਦਭਾਵਨਾ ਮਿਲਣੀ ਦਾ ਆਯੋਜਨ ਕੀਤਾ ਗਿਆ। ਇਸ ਸਦਭਾਵਨਾ ਮਿਲਣੀ ਵਿੱਚ ਅੰਬੇਡਕਰ ਮਿਸ਼ਨ ਸੁਸਾਇਟੀ ਦੇ ਮੈਂਬਰਾਂ ਤੋਂ ਇਲਾਵਾ ਅੰਬੇਡਕਰ ਭਵਨ ਟਰੱਸਟ (ਰਜਿ.) ਅਤੇ ਆਲ ਇੰਡੀਆ ਸਮਤਾ ਸੈਨਿਕ ਦਲ (ਰਜਿ.), ਪੰਜਾਬ ਯੂਨਿਟ ਦੇ ਮੈਂਬਰਾਂ ਨੇ ਵੀ ਸ਼ਿਰਕਤ ਕੀਤੀ। ਭਾਰਦਵਾਜ ਨੇ ਕਿਹਾ ਕਿ ਸੁਭਾਸ਼ ਮੁਸਾਫਰ ਨੇ ਆਪਣੇ ਭਾਸ਼ਣ ਵਿੱਚ ਫਾਊਂਡਰ ਟਰਸਟੀ ਸ੍ਰੀ ਲਾਹੌਰੀ ਰਾਮ ਬਾਲੀ ਦੇ ਜ਼ਿੰਦਗੀ ਭਰ ਦੇ ਸੰਘਰਸ਼ ਪ੍ਰਤੀ ਸਤਿਕਾਰ ਪ੍ਰਗਟਾਉਂਦਿਆਂ ਕਿਹਾ ਕਿ ਉਨ੍ਹਾਂ ਦੇ ਯਤਨਾਂ ਨਾਲ ਅੰਬੇਡਕਰ ਭਵਨ ਦੀ ਉਸਾਰੀ ਤੋਂ ਇਲਾਵਾ ਅੰਬੇਡਕਰੀ ਸਾਹਿਤ ਦੀ ਪ੍ਰਕਾਸ਼ਨਾ ਨਾਲ ਪੂਰੇ ਭਾਰਤ ਵਿੱਚ ਲੋਕ ਚੇਤਨਾ ਪੈਦਾ ਹੋਈ। ਬਾਲੀ ਸਾਹਿਬ ਦੀਆਂ ਲਿਖਤਾਂ, ਭਾਸ਼ਣਾਂ ਅਤੇ ਅੰਦੋਲਨਾਂ ਨੇ ਦੱਬੇ-ਦਰੜੇ ਲੋਕਾਂ ਦੀ ਮਾਨਸਿਕਤਾ ਵਿੱਚ ਇਨਕਲਾਬੀ ਪਰਿਵਰਤਨ ਲਿਆਉਣ ਵਿੱਚ ਇਤਿਹਾਸਿਕ ਰੋਲ ਅਦਾ ਕੀਤਾ। ਮੁਸਾਫਰ ਨੇ ਕਿਹਾ ਕਿ ਅੰਬੇਡਕਰ ਭਵਨ ਸਾਡਾ ਸਾਰਿਆਂ ਦਾ ਪ੍ਰੇਰਨਾ ਸਰੋਤ ਹੈ। ਉਨ੍ਹਾਂ ਨੇ ਆਉਣ ਵਾਲੀ ਜਨਗਣਨਾ ਵਿੱਚ ਸਾਰੀਆਂ ਅਨੁਸੂਚਿਤ ਜਾਤੀਆਂ, ਜਨਜਾਤੀਆਂ ਨੂੰ ਬੁੱਧ ਧਰਮ ਵਿੱਚ ਰਜਿਸਟਰਡ ਕਰਨ ਤੇ ਜ਼ੋਰ ਦਿੱਤਾ। ਉਨ੍ਹਾਂ ਨੇ 24 ਸਤੰਬਰ, 1932 ਨੂੰ ਡਾ. ਅੰਬੇਡਕਰ ਸਾਹਿਬ ਅਤੇ ਹਿੰਦੂ ਲੀਡਰਾਂ ਵਿਚਕਾਰ ਹੋਏ ਪੂਨਾ ਪੈਕਟ ਦਾ ਜ਼ਿਕਰ ਕਰਦਿਆਂ ਕਿਹਾ ਕਿ ਸੰਵਿਧਾਨ ਵਿੱਚ ਦਰਜ ਹੋਣ ਦੇ ਬਾਵਜੂਦ ਨਿੱਜੀਕਰਣ ਦੀ ਯੋਜਨਾ ਲਾਗੂ ਕਰਕੇ ਅੱਜ ਇਸ ਨੂੰ ਲਗਭਗ ਖਤਮ ਹੀ ਕਰ ਦਿੱਤਾ ਗਿਆ ਹੈ। ਉਨ੍ਹਾਂ ਨੇ ਹਰਮੇਸ਼ ਜੱਸਲ ਜੀ ਵੱਲੋਂ ਪੁੱਛੇ ਗਏ ਪ੍ਰਸ਼ਨ ਦੇ ਜਵਾਬ ਵਿੱਚ ਹਿਮਾਚਲ ਪ੍ਰਦੇਸ਼ ਵਿੱਚ ਬੁੱਧ ਧਰਮ ਦੀ ਇਤਿਹਾਸਿਕਤਾ ਅਤੇ ਵਰਤਮਾਨ ਸਥਿਤੀ ਦਾ ਜ਼ਿਕਰ ਕੀਤਾ। ਇਸ ਸਦਭਾਵਨਾ ਮਿਲਣੀ ਤੇ ਮੁੱਖ ਮਹਿਮਾਨ ਸੁਭਾਸ਼ ਮੁਸਾਫਰ ਅਤੇ ਹਾਜਰੀਨ ਦਾ ਸਵਾਗਤ ਕਰਦਿਆਂ ਡਾ. ਜੀ.ਸੀ. ਕੌਲ ਨੇ ਅੰਬੇਡਕਰ ਭਵਨ ਦੀ ਇਤਿਹਾਸਿਕ ਅਹਿਮੀਅਤ, ਸੇਠ ਕਰਮ ਚੰਦ ਬਾਠ, ਐਡਵੋਕੇਟ ਆਰ.ਸੀ. ਪਾਲ, ਅਤੇ ਉਨ੍ਹਾਂ ਦੇ ਸਹਿਯੋਗੀ ਟਰੱਸਟੀਆਂ ਵੱਲੋਂ ਪਾਏ ਗਏ ਯੋਗਦਾਨ ਦਾ ਵਿਸਤ੍ਰਿਤ ਜ਼ਿਕਰ ਕੀਤਾ। ਉਨ੍ਹਾਂ ਕਿਹਾ ਕਿ ਜਬਰਦਸਤ ਵਿਰੋਧੀ ਹਾਲਾਤ ਅਤੇ ਬੇਹੱਦ ਆਰਥਿਕ ਔਕੜਾਂ ਦੇ ਬਾਵਜੂਦ ਅੰਬੇਡਕਰ ਭਵਨ ਨੇ ਆਪਣੀ ਆਨ, ਬਾਨ ਤੇ ਸ਼ਾਨ ਨੂੰ ਕਾਇਮ ਰੱਖਿਆ ਹੈ। ਡਾ. ਕੌਲ ਨੇ ਸਮਾਜ ਹਿਤੈਸ਼ੀ ਅਤੇ ਅੰਬੇਡਕਰੀ ਵਿਚਾਰਧਾਰਾ ਪ੍ਰਤੀ ਸਮਰਪਿਤ ਸਾਰੇ ਸਾਥੀਆਂ ਤੋਂ ਭਰਪੂਰ ਸਹਿਯੋਗ ਦੀ ਮੰਗ ਕੀਤੀ। ਸ੍ਰੀ ਰਮੇਸ਼ ਚੰਦਰ ਰਿਟਾਇਰਡ ਅੰਬੈਸਡਰ ਨੇ ਸੁਭਾਸ਼ ਮੁਸਾਫਰ ਦੁਆਰਾ ਪ੍ਰਗਟਾਏ ਵਿਚਾਰਾਂ ਦੀ ਪ੍ਰਸ਼ੰਸਾ ਕਰਦਿਆਂ ਕਿਹਾ ਕਿ ਮਹੱਤਵਪੂਰਨ ਮੁੱਦਿਆਂ ਤੇ ਆਪਣਾ ਧਿਆਨ ਫੋਕਸ ਕਰਕੇ ਅਤੇ ਉਨ੍ਹਾਂ ਉੱਪਰ ਅਮਲ ਕਰਕੇ ਹੀ ਸਮਾਜਿਕ ਪਰਿਵਰਤਨ ਲਿਆਂਦਾ ਜਾ ਸਕਦਾ ਹੈ। ਉਨ੍ਹਾਂ ਦਾ ਵਿਚਾਰ ਸੀ ਕਿ ਆਪਸੀ ਸਹਿਯੋਗ ਅਤੇ ਸਕਾਰਾਤਮਕ ਆਲੋਚਨਾ ਹਰ ਵਿਅਕਤੀ ਅਤੇ ਸੰਸਥਾ ਦੀ ਪ੍ਰਗਤੀ ਵਿੱਚ ਅਹਿਮ ਰੋਲ ਅਦਾ ਕਰਦੀ ਹੈ। ਸ੍ਰੀ ਸੋਹਨ ਲਾਲ ਚੇਅਰਮੈਨ ਨੇ ਟਰੱਸਟ ਦੀਆਂ ਭਵਿੱਖ ਮੁਖੀ ਯੋਜਨਾਵਾਂ ਦਾ ਜ਼ਿਕਰ ਕਰਦਿਆਂ ਕਿਹਾ ਕਿ ਛੇਤੀ ਹੀ ਭਵਨ ਵਿੱਚ ਬਾਬਾ ਸਾਹਿਬ ਡਾ. ਅੰਬੇਡਕਰ ਜੀ ਦਾ ਬਸਟ ਸਥਾਪਤ ਕੀਤਾ ਜਾ ਰਿਹਾ ਹੈ। ਪ੍ਰੋਫੈਸ਼ਨਲ ਕੋਰਸਿਸ ਅਤੇ ਹੋਰ ਉੱਚ ਵਿੱਦਿਅਕ ਡਿਗਰੀਆਂ ਪ੍ਰਾਪਤ ਕਰਨ ਲਈ ਗਰੀਬ ਤੇ ਲਾਇਕ ਵਿਦਿਆਰਥੀਆਂ ਦੀ ਇੱਛਾ ਪੂਰਤੀ ਲਈ ਰਾਸ਼ਟਰੀ ਪੱਧਰ ਦੀਆਂ ਕੁਝ ਸਮਾਜਿਕ ਸੰਸਥਾਵਾਂ ਨਾਲ ਵੀ ਵਿਚਾਰ ਚਰਚਾ ਹੋ ਰਹੀ ਹੈ ਅਤੇ ਆਸ ਹੈ ਕਿ ਛੇਤੀ ਇਸਦੇ ਕੁਝ ਸਾਰਥਕ ਸਿੱਟੇ ਨਿਕਲਣਗੇ। ਉਨ੍ਹਾਂ ਨੇ ਅੱਜ ਦੀ ਇਸ ਸਦਭਾਵਨਾ ਮਿਲਣੀ ਦੀ ਪ੍ਰਸ਼ੰਸਾ ਕਰਦਿਆਂ ਸੁਭਾਸ਼ ਮੁਸਾਫਰ ਜੀ ਅਤੇ ਹਾਜਰ ਸਰੋਤਿਆਂ ਦਾ ਵਿਸ਼ੇਸ਼ ਧੰਨਵਾਦ ਕੀਤਾ। ਸਟੇਜ ਸੰਚਾਲਨ ਬਲਦੇਵ ਰਾਜ ਭਾਰਦਵਾਜ ਨੇ ਬਾਖੂਬੀ ਕੀਤਾ। ਇਸ ਮੌਕੇ ਚਰਨ ਦਾਸ ਸੰਧੂ, ਹਰਮੇਸ਼ ਜੱਸਲ, ਪ੍ਰੋਫੈਸਰ ਬਲਬੀਰ, ਪ੍ਰੋਫੈਸਰ ਅਜਿੰਦਰ ਸਿੰਘ, ਹਰਭਜਨ ਨਿਮਤਾ, ਨਿਰਮਲ ਬਿੰਜੀ, ਰਾਮ ਲਾਲ ਦਾਸ, ਗੁਰਦਿਆਲ ਜੱਸਲ, ਬੈਂਕ ਮੈਨੇਜਰ ਮਲਕੀਤ ਸਿੰਘ, ਚੌਧਰੀ ਹਰੀ ਰਾਮ, ਪਸ਼ੌਰੀ ਲਾਲ ਸੰਧੂ, ਕ੍ਰਿਸ਼ਨ ਕਲਿਆਣ, ਮਨੋਹਰ ਲਾਲ ਮਹੇ, ਗੌਤਮ ਬੋਧ, ਮੈਡਮ ਸੁਦੇਸ਼ ਕਲਿਆਣ ਅਤੇ ਕਵਿਤਾ ਚਾਂਡੇ ਹਾਜ਼ਰ ਸਨ।

ਬਲਦੇਵ ਰਾਜ ਭਾਰਦਵਾਜ
ਜਨਰਲ ਸਕੱਤਰ
ਅੰਬੇਡਕਰ ਮਿਸ਼ਨ ਸੁਸਾਇਟੀ
ਪੰਜਾਬ (ਰਜਿ.)

Dhamma Waves team in Bodhgaya

Dhamma Waves team in Bodhgaya, participating in a peace March on 17.09. 2024. Buddhist monks and laity from all over India are staging peaceful protest against the BT Act 1947(BTMC). Venkatesh Magyanavara, state Coordinator of the All India Buddhist Forum emphasised that the central and state governments should fully hand over the Buddha Vihara to Buddhists.

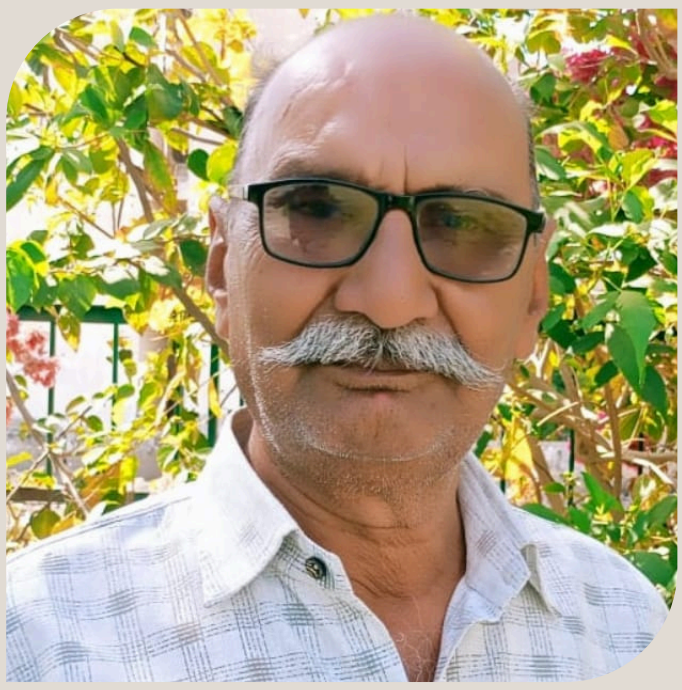

श्री सी. आर. परिहार जी

Support for Bheem Patrika

आयु. सी. आर. परिहार जी (चतराराम जी परिहार), से. नि., शिक्षा विभाग, राजस्थान सरकार, पाली-मारवाड़ (राज.), जो भीम पत्रिका के गत 2-3 साल से वार्षिक सदस्य हैं, ये भीम पत्रिका के साथ-साथ जरूरतमंद विद्यार्थियों की भी मदद करते आ रहे हैं.
अभी हाल ही में ₹1000/- (एक हजार रुपए) की राशि का भीम पत्रिका को अपना सहयोग प्रदान करने पर हम इनका हार्दिक बधाई के साथ बहुत-बहुत साधुवाद ज्ञापित करते हैं.

श्री बी. स. झुरिया जी पाली मारवाड़ द्वारा ₹500/- की राशि का भीम पत्रिका को अपना सहयोग प्रदान करने पर हम इनका हार्दिक बधाई के साथ बहुत-बहुत साधुवाद ज्ञापित करते हैं.

BHEEM PATRIKA
भीम पत्रिका
Vol.1, Issue 12

समता सैनिक दल ने अंबेडकर भवन में सेमिनार आयोजित किया

Adv Kuldip Bhatti, President, Samata Sainik Dal, Punjab unit addressing the audience.

Shri Charan Dass Sandhu, President, Ambedkar Mission Society, Punjab, addressing the audience.

समता सैनिक दल ने अंबेडकर भवन में सेमिनार आयोजित किया

From Left to right: CD Sandhu, Adv.Kuldip Bhatti, GK Sabrawal(Retd Judge), Prof.Ajit Chahal & Gautam Boudh.

अखिल भारतीय समता सैनिक दल (रजि.), पंजाब इकाई द्वारा 'पूना पैक्ट' और माननीय सर्वोच्च न्यायालय के '1 अगस्त 2024 को आरक्षण' पर महत्वपूर्ण फैसले को लेकर एक सेमिनार 29 सितंबर 2024 को अंबेडकर भवन, डॉ. अंबेडकर मार्ग, जालंधर में आयोजित किया गया। सेमिनार के मुख्य वक्ता प्रोफेसर (डॉ.) अजीत सिंह चहल, कानून विभाग, कुरूक्षेत्र विश्वविद्यालय, कुरूक्षेत्र (हरियाणा) और सेवानिवृत्त न्यायाधीश माननीय जीके सभरवाल ने "पूना पैक्ट" और 'आरक्षण के संबंध में राज्य बनाम दविंदर सिंह पर माननीय सर्वोच्च न्यायालय द्वारा 1 अगस्त, 2024 का निर्णय' विषयों पर बहुत विस्तृत जानकारी प्रदान की। दल के पूर्व प्रदेश अध्यक्ष जसविंदर वरयाणा ने अतिथियों और श्रोताओं का स्वागत किया। मुख्य वक्ताओं के भाषण से पहले दल की केंद्रीय कार्यकारिणी समिति के सदस्य वरिंदर कुमार ने सेमिनार के विषयों पर अखिल भारतीय समता सैनिक दल की अपनी स्थिति स्पष्ट की कि उपरोक्त विषयों पर वक्ताओं या श्रोताओं के विचार व्यक्तिगत होंगे, हमारा उद्देश्य सिर्फ समाज में एकता और आपसी भाईचारा कायम रखना है। प्रमुख वक्ताओं के भाषण के बाद उन्होंने श्रोताओं के सवालों का संतोषजनक जवाब दिया। अंबेडकर मिशन सोसाइटी पंजाब (रजि.) के अध्यक्ष चरण दास संधू ने अपने भाषण में कहा कि इसमें कोई संदेह नहीं है कि दलित वर्गों के अधिकार सांप्रदायिक निर्णय के अनुसार दिए गए थे, वे पूना पैक्ट से कहीं अधिक प्रभावशाली थे, क्योंकि इसने दलितों को अलग-अलग निर्वाचन क्षेत्रों के माध्यम से अपने विधानमंडलों में अपने प्रतिनिधियों को चुनने का अधिकार दिया था। लेकिन यह भी सत्य है कि पूना पैक्ट ने भारत का इतिहास बदल दिया। पूना पैक्ट के माध्यम से दलित समुदायों को इतिहास में पहली बार अपने प्रतिनिधि चुनने और भेजने का अधिकार मिला।

दल के प्रदेश अध्यक्ष एडवोकेट कुलदीप भट्टी ने अतिथियों एवं श्रोताओं का धन्यवाद करते हुए कहा कि 1 अगस्त, 2024 के आरक्षण को लेकर माननीय सर्वोच्च न्यायालय के फैसले के बाद जिन राजनीतिक दलों या नेताओं ने दलित समाज में दरार पैदा करने की कोशिश की है, हम उनकी निंदा करते हैं और हमें हर कीमत पर आपसी भाईचारा बनाए रखना चाहिए । मंच संचालन दल के प्रदेश महासचिव सन्नी थापर ने बखूबी किया। इस आयोजन को अंबेडकर भवन ट्रस्ट (रजि.) और अंबेडकर मिशन सोसाइटी पंजाब (रजि.) द्वारा पूर्ण समर्थन प्राप्त था। इस मौके पर अन्य लोगों के अलावा बलदेव राज भारद्वाज, महेंद्र संधू, गौतम, मैडम कविता ढांडे, ज्योति प्रकाश, चमन लाल, हरभजन निमता, निर्मल बिनजी, चरणजीत सिंह, डॉ. संदीप मेहमी, एडवोकेट सुनील मेहमी, एम. आर. सल्हन, रोशन भारती, अजीत सिंह, मलकीत खांबरा, शाम लाल जस्सल, राम लाल दास, एडवोकेट अश्वनी दादरा, एडवोकेट मानसी सहोता, जसपाल सिंह आदि शामिल थे। यह जानकारी अखिल भारतीय समता सैनिक दल (रजि.) पंजाब इकाई के महासचिव सनी थापर ने एक प्रेस बयान के माध्यम से दी।

सन्नी थापर, महासचिव, अखिल भारतीय समता सैनिक दल (रजि.), पंजाब इकाई

BHEEM PATRIKA
भीम पत्रिका
October, 2024
Vol.1, Issue 12

समता सैनिक दल ने अंबेडकर भवन में सेमिनार आयोजित किया

On the dais: Shri Shamsher Singh Dullo, MP, RS, Prof GC Kaul, Shri Sohan Lal

Ramabai Ambedkar Yadghar Hall (now functional)

Shri Lahori Ram Balley at the site of construction along with Nirmal Bingee, Dr. Tajinder Kumar &Vinod Kumar

Ramabai Ambedkar Yadghar Hall (now functional)

All trustees of Ambedkar Bhawan Trust, Jalandhar are grateful to shri Shamsher Singh Dullo, Member Rajya Sabha and Shri Sushil Rinku, MLA who helped to secure government grants for the construction of this hall. Seminars, conferences and symposiums are held in this hall. Balley Saheb, at the age of 93 (1930-2023) despite his frail health, used to visit everyday Ambedkar Bhawan and supervised the construction of this hall. Other young trustees like Shri Baldev Raj Bhardwaj, Dr. Surendra Ajnat, Prof GC Kaul, Shri Sohan Lal, Dr. Ram Lal Jassi, Dr. Rahul Kumar Balley, Dr. Rahul Jassi, Shri Harmesh Jassal, spared their valuable time to liaise up with the PWD Engineers, workers and government officials. Shri Charan Das Sandhu of Ambedkar Mission Society during the construction regularly visited Ambedkar Bhawan along with his brother Shri Mohinder Sandhu and helped the trustees. It is historic achievement by the trustees of Ambedkar Bhawan Trust (Regd), Jalandhar.

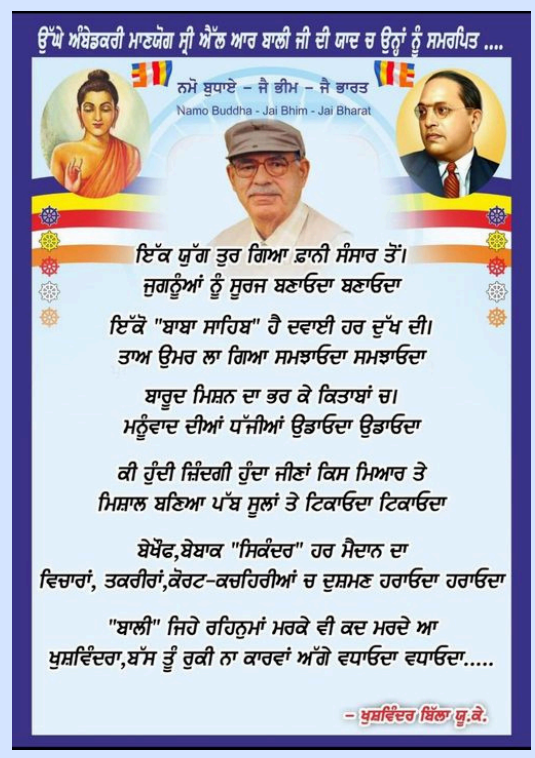

BHEEM PATRIKA
भीम पत्रिका
Vol.1, Issue 12

Pages from the History

If there is any religion that would cope with modern scientific needs, it would be Buddhism- Albert Einstein

RSS was against Hindu Code Bill

The Anti- Hindu Code Bill Committee held hundreds of meetings throughout India, where sundry swami denounced these proposed legislation. The participants in this movement presented themselves as religious warriors (dharmveer) fighting a religious war(dharmayudh). The Rashtriya Swayamsevak Sangh (RSS) threw its weight behind the agitation. On 11 December 1949, the RSS reorganised a public meeting at the Ram Lial ground in Delhi, where speaker after speaker condemned the bill. One called it 'an atom bomb' on Hindu society. Another liked to the draconian Rowlatt Act introduced by the colonial state; just as the protests against that act led to the downfall of the British, he said, the struggle against this bill would signal the downfall of Nehru`s government. The next day a group of RSS workers marched on the Assembly buildings, shouting 'Down with Hindu code bill' and May Pandit Nehru perish. The protestors burnt effigies of the prime minister and Dr Ambedkar, and then vandalised the car of Sheikh Abdullah Ramachandra Guha (2007), India After Gandhi: The History of the World`s Largest Democracy, Macmillan, p.231).

हिंदी में अनुवाद

आरएसएस हिंदू कोड बिल के ख़िलाफ़ था

हिंदू विरोधी कोड बिल समिति ने पूरे भारत में सैकड़ों बैठकें कीं, जहां विभिन्न स्वामी ने प्रस्तावित कानून की निंदा की। इस आंदोलन में भाग लेने वालों ने खुद को धार्मिक युद्ध (धर्मयुद्ध) लड़ने वाले धार्मिक योद्धाओं (धर्मवीर) के रूप में प्रस्तुत किया। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ ने इस आंदोलन के पीछे अपना पूरा ज़ोर लगा दिया। 11 दिसंबर 1949 को, आरएसएस ने दिल्ली के राम लियाल मैदान में एक सार्वजनिक बैठक का आयोजन किया, जहाँ एक के बाद एक वक्ताओं ने इस विधेयक की निंदा की। एक ने इसे हिंदू समाज पर 'परमाणु बम' बताया। एक अन्य को औपनिवेशिक राज्य द्वारा लागू किया गया कठोर रोलेट एक्ट पसंद आया; उन्होंने कहा, जिस तरह उस अधिनियम के खिलाफ विरोध प्रदर्शन अंग्रेजों के पतन का कारण बना, उसी तरह इस विधेयक के खिलाफ संघर्ष नेहरू की सरकार के पतन का संकेत होगा। अगले दिन आरएसएस कार्यकर्ताओं के एक समूह ने 'हिंदू कोड बिल मुर्दाबाद' और पंडित नेहरू नष्ट हो जाएं के नारे लगाते हुए विधानसभा भवनों पर मार्च किया। प्रदर्शनकारियों ने प्रधान मंत्री और डॉ. अम्बेडकर के पुतले जलाए, और फिर शेख अब्दुल्ला रामचन्द्र गुहा की कार में तोड़फोड़ की (2007), इंडिया आफ्टर गांधी: द हिस्ट्री ऑफ द वर्ल्ड्स लार्जेस्ट डेमोक्रेसी, मैकमिलन, पृष्ठ 231).

SP-BSP alliance and adverse impact on Dalits in Uttar Pradesh

Kanshi Ram and Mulayam Singh Yadav were praising each other. Following 1993 elections, a coalition government was formed in Uttar Pradesh (UP) by the SP and the BSP, headed by Mulayam Singh Yadav. The BSP obtained 11 ministerial portfolios out of 27. According to a report published by India Today 15 October 1994c, 35-36, 720 out of 900 teachers appointed in Kumaon & Garhwal District were Yadav. In the police force, out of 6,000 officers, 4,200 were reportedly Yadav and 70 percent of the policemen recruited by the UP government were also Yadav. Comment by editor: Kanshi Ram and 27 BSP Ministers could do nothing to safeguard the interests of the Dalits in Uttar Pradesh. (Ref. Sudha Pai & others (2002), Dalit Assertion and the Unfinished Democratic Revolution- The Bahujan Samaj Party in Uttar Pradesh, Sage Publications; p.166.

Kanshi Ram with Mulayam Singh Yadav

हिंदी में अनुवाद

उत्तर प्रदेश में सपा-बसपा गठबंधन का दलितों पर प्रतिकूल प्रभाव।

कांशीराम और मुलायम सिंह यादव एक दूसरे की तारीफ कर रहे थे. 1993 के चुनावों के बाद, उत्तर प्रदेश (यूपी) में मुलायम सिंह यादव के नेतृत्व में सपा और बसपा की गठबंधन सरकार बनी। बीएसपी को 27 में से 11 मंत्री पद मिले। इंडिया टुडे द्वारा 15 अक्टूबर 1994 को प्रकाशित एक रिपोर्ट के अनुसार, कुमाऊं और गढ़वाल जिले में नियुक्त 900 शिक्षकों में से 35-36, 720 यादव थे। पुलिस बल में, 6,000 अधिकारियों में से, 4,200 कथित तौर पर यादव थे और यूपी सरकार द्वारा भर्ती किए गए 70 प्रतिशत पुलिसकर्मी भी यादव थे। संपादक की टिप्पणी: कांशीराम और बसपा के 27 मंत्री उत्तर प्रदेश में दलितों के हितों की रक्षा के लिए कुछ नहीं कर सके। (संदर्भ सुधा पाई और अन्य (2002), दलित अभिकथन और अधूरी लोकतांत्रिक क्रांति- उत्तर प्रदेश में बहुजन समाज पार्टी, सेज प्रकाशन; पृष्ठ 166.

"True freedom can only be achieved when all forms of discrimination are eliminated."
-Dr B. R. Ambedkar

BHEEM PATRIKA
भीम पत्रिका
Vol.1, Issue 12

Buddhism: The Significance of 14th Oct, 1956

- B. R. Bhardwaj

Baldev Raj Bhardwaj

Surendra Ajnat (1983) in his book "बुद्धधम्मः भ्रान्ति निवारणं" Beautifully described Buddha`s teachings "The great man Buddha has said: Kalamo, do not go after what has been ingrained in your mind due to repeated hearing, nor the things coming from forefathers, nor rumours. Do not go after what is written in religious scriptures, nor do you go after doubtful and suspicious things. Do not go after things that are said to be self-evident, nor do you go after empty arguments. Do not go with a pred-determined bias towards any idea or principle nor be biased towards any idea or principle because this idea has been before, that is, we are already familiar with it. Do not go after someone`s superficial qualifications nor with the thought that 'this sanyasi /bhikshu/person is our Guru, hence, everything he says will be true. 'Kalamo, when you come to know the Buddha, when your own intelligence, your own conscience tells you that a certain thing is innocent, a certain thing is praised by the wise, adopting and practising a certain thing will bring benefit and happiness -then accept it and follow it firmly .

The Dalits of the world are grateful to Bharat Ratna Baba Saheb Dr. Bhimrao Ramji Ambedkar (14thApril1891-6th Dec,1956) who embraced Buddhism at Nagpur (Maharashtra) with millions of Dalits and urged them to embrace Buddhism. The choice of Buddhism was not in hurry but Dr. Ambedkar read all religions and faiths of the world before embracing Buddhism. In 1950, he not only praised the Buddha at the expense of Krishna, Christ, and Mohammed but also visited Ceylon at the invitation of the Young Men's Buddhist Association, Colombo, [**1] Surendra Ajnat(1983), बुद्धधम्मः भ्रान्ति निवारणं , Buddhist Publishing House, Pvt Ltd, Jalandhar,p.8&9.** addressed a meeting of the World Fellowship of Buddhists in Kandy, and appealed to the Untouchables of Ceylon to embrace Buddhism. In 1951 Dr Ambedkar defended the Buddha against the charge that he had been responsible for the downfall of the Indian woman and compiled the Buddha Upasana Patha, a small collection of Buddhist devotional texts.

In 1955 he founded the Bhartiya Bauddha Mahasabha or Indian Buddhist Society and installed an image of the Buddha in a temple that has been built at Dehu Road, near Poona. On the evening of 5 December, he asked the Preface and Introduction to The Buddha and His Dhamma to be brought to his bedside, so that he could work on them during the night, and the following morning, he was found dead. It was 6 December, he was 64 years and 7 months old, and he had been a Buddhist for only seven weeks.

The book was written during the years 1951-1956 and published by the People's Education Society in November,1957 almost a year after the great leader`s death. The writing of the Buddha and His Dhamma was thus an attempt on Ambedkar`s part to produce the Buddhist Bible which he had, in his 1951 article, pronounced 'quite necessary' if the ideal of spreading Buddhism was to be realised. Despite his use of the inappropriate term' Bible'. however, Ambedkar was far from regarding the Buddha and His Dhamma as possessing any special authority. As he wrote of the work in the (recently published preface, 'How good it is I must leave it to readers to judge. As for myself, I claim no originality. I am only a compiler. All I hope is that readers will like the presentation. I have made it simple and clear[1].

Ambedkar`s approach to Buddhism thus is social and ethical rather than philosophical and mystical. The schools (Mahayana & Hinayana) of Buddhism are unanimous that Dharma-dana, the Gift of the Doctrine, is the highest form of Giving. It is this fact which makes Buddhism a missionary religion in the true sense of the term. According to Buddha, 'All Happiness ends in sorrow, and life ends in death. All creatures begin their journey towards death from the very moment of their conception in the womb. Powerful monarchs, skilled archers, clever magicians, haughty deva, furious elephants, ferocious lions and tigers, venomous serpents and malignant demons-all these can quell, subdue and slay their enemies, but even they are powerless against death, the fierce and irresistible foe of all living beings. Realizing the peril of death, a wise man should feel fear and trepidation(samvega) and resolve to become a Bodhisattva'[2]. There is NO soul concept in Buddhism.

It is a fact that there is substantial increase in the Buddhist population. According to the 2011 census, the Buddhist population in India is 0.84 crores. In every part of India there is a mass religious conversion and people are found embracing Buddhism and quitting Manuwad which is responsible for the prevalence of the caste system in India. Buddha Vihara are being set up in almost every part of the world. Revival of Buddhism in India is on the move. Nevertheless, it becomes a duty of each Ambedkarite to propagate Buddhism with enthusiasm and vigour. Dr. Ambedkar made 22 Buddhist vows and urged the followers to do the same. We all must follow.

-**Shri Baldev Raj Bhardwaj** is a retired Senior Manager from Bank of India. He is associated with Ambedkar Mission for the last more than 40 years. He is a staunch Ambedkarite & practising Buddhist. He is a trustee of Ambedkar Bhawan Trust (Regd), Jalandhar. He contributes article to national & international newspapers. He is also a social activist and has been aggressively raising the issues of the downtrodden at the national level.

[1] Bhikshu Sangharakshita(1986), Ambedkar and Buddhism, Windhorse Publications, Glasgow,p.146.

[2] Bhikshu Sangharakshita (1957) A Survey of Buddhism, The Indian Institute of World Culture, Bangalore, P.459.

BHEEM PATRIKA
भीम पत्रिका
Vol.1, Issue 12

Revolution is an inalienable right of mankind. Freedom is an imperishable birthright of all.

— Bhagat Singh

Bhagat Singh in jail in 1927(Photo Source: Punjab State Archives via Wikimedia commons); right Bhagat Singh in 1929 (Photo Source; Ramnath Photographers, Delhi via Wikimedia commons.

Shaheed Bhagat Singh - A Revolutionary and Folk Hero in the world

-Anand Kumar Balley

Shaheed-e-Azam gets the status **Bhagat Singh** `s patriotism. He is known for his courage and heroism.

Bhagat Singh was born on 28 September 1907 in Banga District Lyallpur, now Faisalabad (Pakistan). Bhagat Singh joined Lahore National College for higher education. There he met revolutionary comrades like Bhagwati Charan Vohra, Sukhdev, Yashpal. In 1922-23 Bhagat Singh took an active part in the National Natak Club.

Bhagat Singh and his associates threw a bomb in the Delhi Central Assembly on April 8, 1929 and were arrested. On June 12, 1929 Bhagat Singh and BK Dutt were sentenced to life imprisonment. Then he was sentenced to death on October 7, 1930 in the Lahore Conspiracy Case but on March 23, 1931, Bhagat Singh, Rajguru, Sukhdev were hanged. Bhagat Singh will remain alive in the memories of the people of the world till eternity. He lived dangerously and sacrificed his life for the country. He happily kissed the gallows & died at the age of 23. He is a role model for youngsters.

Bhagat Singh, Shivaram Rajguru and Sukhdev Thapar are known, for their contribution to India's independence from the British colonial rule. It was Bhagat Singh who popularized the phrase 'Inquilab Zindabad (long live revolution) during the pre-Independence era. Bhagat Singh said, "They may kill me, but they cannot kill my ideas. They can crush my body, but they will not be able to crush my spirit".

Devesh Khatarkar(2015) in his article: "Bhagat Singh on the problem of Untouchability: A brief Discussion on his article Achoot Samasya wrote, "Bhagat Singh, the much celebrated and admired Indian revolutionary, not only criticized the rising nature of communalism in Indian society but had also written on the grave issue of Untouchability and Caste in the years of independence struggle.

Anand Kumar Balley

At the early age of 16 years, in June 1928, he wrote an article titled Achoot Samasya (Problem of Untouchability). Bhagat Singh appealed freedom fighters to work for untouchables". (https://sanhati.com/articles/15068/).

30-foot-tall statue of Bhagat Singh at Shaheed Bhagat Singh International Airport, Mohali has been installed. Chief Minister Punjab Mann had stated that the statue would play a pivotal role in preserving the glorious legacy of this young martyr among the younger generations of the Punjabi diaspora arriving at the airport from both within the country and abroad.

*__Anand Kumar Balley__ lives in Canada. He is a staunch Ambedkarite and Buddhist. He is a founder member of "Dhamma Waves", spreading the message of Tathagata Gautam Buddha through this platform across the world. He along with his team members have been funding the poor Dalit students in Punjab. He participates in international conferences. He donates books on & by Dr BR Ambedkar to libraries in Canada, published by Bheem Patrika Publications. He is also a social activist.

"Merciless criticism and independent thinking are the two necessary traits of revolutionary thinking."

— Bhagat Singh

BHEEM PATRIKA
भीम पत्रिका
Vol.1, Issue 12

बोधीसत्व डॉ बाबासाहाब आंबेडकर बुध्दिस्ट सेमिनरी, उंटखाना, संचालीत डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर स्मारक समिती दिक्षाभूमि, नागपुर

Bhante Dhamma Sarthi

स्थापना-10 में 2022 को भदन्त आर्य नागार्जुन सुरई ससाई अध्यक्ष, प.पु. डॉ बाबासाहेब आंबेडकर स्मारक समिती, दिक्षाभूमी नागपुर और सचिव, सुधीर फुलझेले, दिक्षाभुमी के अन्य सदस्य इनके व्दारा स्थापना की गई। 11 में 2022 को भदन्त धम्मसारथी इनको बुध्दीस्ट सेमिनरी का कार्यभार सौपा गया, मुख्य धम्म प्रशिक्षक के रूप मे भिक्खु, श्रामणेर, उपासक, उपासीका को धम्म प्रशिक्षण का कार्य शुरू हुवा।

संकल्पना :- डॉ. भिमराव बाबासाहाब आंबेडकर जी ने 4 दिंसंबर 1954 को रंगून (बर्मा) मे आयोजित आंतरराष्ट्रीय बौद्ध सम्मेलन में जो भाषण दिया था उसमे जो प्रमुख मुद्दे उभर कर सामने आयेउनमे से कुछ बातो को केंद्रबिन्दु मानकर संकल्प किया गया,भारत में बुद्ध धम्म का प्रचार प्रसार सूचारू रूप से होने के लिये निम्न कुछ बाते करना जरूरी थी ।

एक तो बुद्ध धम्म के केंद्र की स्थापना करना जहाँ से उपदेशक बनने के इच्छुक व्यक्तीयों को बुद्ध धम्म तथा अन्य धर्मो के तूलनात्मक अध्ययन की कि शिक्षा दी जा सकें, कई सारे साधारण उपासकों की नियुक्ती करना जो कि लोगों के बीच जाकर बाबासाहेब को अपेक्षित धम्म का उपदेश दे सके, और यह भी देंखे की लोग सही अर्थ में धम्म का कितना पालन कर रहे है या कर हि नही रहें । हर एक रविवार को बुद्ध विहार में सामुहीक वंदना का प्रावधान करना उसके बाद उपदेशो का एक सत्र आयोजित करना समय की माँग है। इन सारी बातो को समझकर भदन्त अरिय नागार्जुन सुरई ससाई जी के मन में बुद्धीस्ट सेमिनरी स्थापित करने के संकल्प का जन्म हुआ।

बुद्धीस्ट सेमिनरी के नाम के सम्बंध में चिंतन -

बौदध राष्ट्रों मे बौद्ध परंपराओं को आधारशीला मानकर बौदध धम्म की शिक्षा प्रदान की जाती है लेकीन भदंत आर्य नागार्जुन सुरई ससाईजी को भारत में पारंपारीक उपासना पद्धतीपर निर्भर धम्म प्रचार नही करना था बल्की उसके बदले में बाबासाहाब को अपेक्षित बौदध धम्म का प्रचार प्रसार करना था भदन्त सुरई ससाई के मनोपटल पर डॉ बाबासाहाब आंबेडकरजी के धम्म क्रांती और संघर्षशील विचारों का जबरदस्त प्रभाव विचारों का होने के कारण हि उन्होने, बोधीसत्व डॉ बाबासाहाब आंबेडकर बुध्दीस्ट सेमिनरी के स्वरूप में नाम को अंतीम सहमती दी।

धम्म प्रशिक्षण के सम्बंध में:-

संदर्भ- The Buddha and his Dhamma इस ग्रंथ में पृष्ठ क्र. 282 में डॉ बाबासाहाब आंबेडकर जी ने जो रूपरेखा बताई है उसके अनुसार :-

धम्म का काम केवल उपदेश देना ही नही होना चाहीए, बल्की जैसे भी हो इससे मनुष्य के मन में सम्यक धम्माचारी होने की आवश्यकता की भावना उपन्न करनी चाहिए । इसके लिए धम्म को दूसरे भी कार्य करने होते है । धम्म व्दारा मनुष्य को यह शिक्षा दी जाये की असम्यक कर्म क्या है, और जो असम्यक कम्म है उससे मनुष्य ने कैसे दूर रहना चाहिये। * सम्यक कम्म क्या है और जो सम्यक कम्म है उसका वह पालन कैसे करे।

* धम्म के इन दो उद्देश्यों के अलावा, बुध्द ने अन्य उद्देश्यों पर भी जोर दिया जिन्हें वे महत्वपूर्ण समझते थे।

1. पहला है- मनुष्य के स्वभाव और उसकी प्रवृत्तियों का प्रशिक्षण। चित्तवृत्ती सुधारने का प्रशिक्षण: कुशल

प्रवृत्ती ही किसी स्थायी सम्यक आचरण के आश्वासन का स्थायी आधार है।

2. दुसरी बात है ' मनुष्य के अकेले होने के स्थीती में भी उचित मार्ग पर डटे रहने का साहस हो। इच्छा

शक्ती का विकास करना और यही सम्यक चेतना स्थिती को प्रभावित करता है,इन सभी

बताए गए संस्कारों के लिए इच्छा शक्ती को विकसीत करना आवश्यक है।

इसी के आधार पर बुध्दिस्ट सेमिनरी मे धम्म वर्ग चलाया जाता है। बडे ब्लैक बोर्ड पर लिखीत स्वरूप में धम्म प्रशिक्षण दिया जाता है और उपासको को नोट्स दिये जाते है ताकी वे उस नोट्स के आधार पर घर जाकर भी चिंतन मनन कर सकें। ठिक उसी प्रकार मन के प्रकृती और स्वभाव का भी प्रशिक्षण दिया जाता है।

उपासक उपासीकाओं के लिए धम्म वर्ग

हर सप्ताह शनिचर के दिन दोपहर 12 बजे से शाम 5 बजे तक धम्म वर्ग में धम्म सिखाया जाता है। प्रशिक्षणार्थीयो को धम्म प्रबोधन कर उन्हे धम्म के आचरण करने के लिये सही अर्थ में उन्हे साहसी बनाया जाता है । या पर साहसी इस शब्द का प्रयोग इसलिये किया गया है क्योंकि जहा दुनिया में दुष्कर्म करने वालो को लोग ताकतवर समझते है वहॉ पर सच्चाई इमानदारी से जीवन व्यतीत करना एक तरह का साहस हि है ।

बच्चों के लिये साप्ताहीक धम्म वर्ग

हर रविवार को सबेरे 9:00 बजे से 11:00 बजे तक बच्चों को धम्म में प्रशिक्षीत किया जाता है जिसके चलते उनपर धम्म संस्कार किये जा सकें, इसके के कारण वे आगें चलकर जीवन में एक अच्छे उपासक उपासिका बन सकें।

निवासी धम्म प्रशिक्षण शिबीर का आयोजन-

लगभग 5 से 10 दिनका धम्म का निवासी शिबीर का आयोजन साल में तीन से चार बार किया जाता है। उस शिबीर में, महाराष्ट्र तेलंगाना, तामीलनाडू, कर्नाटक उत्तर प्रदेश, मध्यप्रदेश,

continue in next edition...

“Believe nothing, no matter where you read it, or who said it, no matter if I have said it, unless it agrees with your own reason and your own common sense.”
-Tathagata Gautama Buddha

BHEEM PATRIKA
भीम पत्रिका
Vol.1, Issue 12

Buddhism

Buddhist Saints and Scholars

In the history of Buddhism, after Gautama Buddha, we came to know about prominent Buddhist saints and scholars from South India who devoted their life for the spread of Buddhism. Some of them are listed below:

Bodhiruchi

Bodhiruchi, which literally means “intelligence loving”, was originally called Dharmaruchi. He hailed from Tamil Nadu and went to China in the 7th century AD during the days of early T` ang dynasty. His original name Dharmaruchi was changed to Bodhiruchi by orders of empress Wu Tso-Thien (AD 684-705. In China, he studied Buddhism under Yasaghosa, a Mahayana Thera and became well-acquainted with the entire Tripitaka within a period of only three years. Thereafter, Bodhiruchi devoted all his time and talents to the work of translating Sanskrit works. During the period AD 693-713, he translated 53 works which ran into 111 volumes in Chinese. He is said to have died in AD727 when he was in his 156th year.

Vajrabodhi

Vajrabodhi(661-730) was born at Podiyakanda in the Pandya country. Another view is that he was a native of Kanchi. He studied at Nalanda, and returned to his native place as a Mahayana monk. He was contemporary of the Pallava king, Narasimhavarman II (c. 700-728 AD). His missionary tours took him to Sri Lanka where he stayed for six months at the Abhayagiri Vihara. Later, along with his disciple Amoghavajra, he went to China for missionary work. He is said to have carried the text of Mahaprajnaparamita with him to China. Vajra bodhi also translated a number of Buddhist works into Chinese. He passed away in China in the year 730 AD.

हिंदी में अनुवाद

बौद्ध संत और विद्वान

बौद्ध धर्म के इतिहास में, गौतम बुद्ध के बाद, हमें दक्षिण भारत के प्रमुख बौद्ध संतों और विद्वानों के बारे में पता चला, जिन्होंने बौद्ध धर्म के प्रसार के लिए अपना जीवन समर्पित कर दिया। उनमें से कुछ नीचे सूचीबद्ध हैं:

बोधिरुचि

बोधिरुचि, जिसका शाब्दिक अर्थ है "बुद्धि को प्यार करना", मूल रूप से धर्मरुचि कहा जाता था। वह तमिलनाडु के रहने वाले थे और 7वीं शताब्दी ईस्वी में शुरुआती टी आंग राजवंश के दिनों में चीन गए थे। महारानी वू त्सो-थिएन (684-705 ई.) के आदेश से उनका मूल नाम धर्मरुचि बदलकर बोधिरुचि कर दिया गया था। चीन में, उन्होंने यासाघोसा, एक महायान थेरा के तहत बौद्ध धर्म का अध्ययन किया और केवल तीन वर्षों की अवधि के भीतर संपूर्ण त्रिपिटक से अच्छी तरह परिचित हो गए। इसके बाद, बोधिरुचि ने अपना सारा समय और प्रतिभा संस्कृत कृतियों के अनुवाद के काम में लगा दी, 693-713 ई. की अवधि के दौरान, उन्होंने 53 कृतियों का चीनी भाषा में अनुवाद किया, जो 111 खंडों में थीं। ऐसा कहा जाता है कि उनकी मृत्यु AD727 में हुई थी उनका 156वाँ वर्ष।

वाजरबोधी

वज्रबोधि (661-730) का जन्म पांड्य देश के पोडियाकांडा में हुआ था। दूसरा मत यह है कि वह कांची के मूल निवासी थे। उन्होंने नालंदा में अध्ययन किया, और महायान भिक्षु के रूप में अपने मूल स्थान पर लौट आये। वह पल्लव राजा, नरसिंहवर्मन द्वितीय (लगभग 700-728 ई.) का समकालीन था। उनकी मिशनरी यात्राएँ उन्हें श्रीलंका ले गईं जहाँ वे अभयगिरि विहार में छह महीने तक रहे। बाद में, वह अपने शिष्य अमोघवज्र के साथ मिशनरी कार्य के लिए चीन गए। ऐसा कहा जाता है कि वह महाप्रज्ञपारमिता का पाठ अपने साथ चीन ले गये थे। वज्र बोधि ने कई बौद्ध कार्यों का चीनी भाषा में अनुवाद भी किया। वर्ष 730 ई. में चीन में उनका निधन हो गया।

BHEEM PATRIKA
भीम पत्रिका
Vol.1, Issue 12
October, 2024

Buddhism

Buddha was satisfied with playing the role of Margadat

The Buddha did not issue orders, but only advised, encouraged , and inspired . He did not pick men up and carry them bodily to the goal of the spiritual life, as it were , but only showed them the way by which they could reach it on their own two feet. Ambedkar is therefore able to say, 'The Buddha made a clear distinction between Margdaata[or Giver of the way and Mokshadata { or Giver of Slavation}. Jesus , Mahommed, and Krishna claimed for themselves the role of Mokshadata.The Buddha was satisfied with playing the role of Margadata. (Sangharakshita(1986), Ambedkar and Buddhism, Windhorse Publications,Glasgow, p.105.

हिंदी में अनुवाद

बुद्ध मार्गदाता की भूमिका निभाकर संतुष्ट थे।

बुद्ध ने आदेश जारी नहीं किये, बल्कि केवल सलाह दी, प्रोत्साहित किया और प्रेरित किया। उन्होंने मनुष्यों को उठाकर आध्यात्मिक जीवन के लक्ष्य तक शारीरिक रूप से नहीं ले जाया, जैसा कि यह था, बल्कि उन्हें केवल वह रास्ता दिखाया जिसके द्वारा वे अपने पैरों पर उस तक पहुँच सकते थे। इसलिए अम्बेडकर यह कहने में सक्षम हैं, 'बुद्ध ने मार्गदाता [या मार्ग दाता और मोक्षदाता { या दासता दाता} के बीच स्पष्ट अंतर किया। यीशु, महोम्मद और कृष्ण ने अपने लिए मोक्षदाता की भूमिका का दावा किया। बुद्ध मार्गदाता की भूमिका निभाने से संतुष्ट थे। (संघरक्षिता(1986), अम्बेडकर और बौद्ध धर्म, विंडहॉर्स प्रकाशन, ग्लासगो, पृष्ठ 105.

Nirvana

Nirvana, being a state transcendent over all conceptual determinations, can be realised only by means of the complete cessation of all thought -constructions, both positive and negative, from the comparatively concrete to the most refined and abstract. (Bhikshu Sangharakshita (1976), A Survey of Buddhism, Bangalore, The Indian Institute of World Culture, p.82.

हिंदी में अनुवाद

निर्वाण

निर्वाण, सभी वैचारिक निर्धारणों से परे एक अवस्था होने के नाते, तुलनात्मक रूप से ठोस से लेकर सबसे परिष्कृत और अमूर्त तक, सकारात्मक और नकारात्मक दोनों, सभी विचार-निर्माण की पूर्ण समाप्ति के माध्यम से ही महसूस किया जा सकता है। (भिक्षु संघरक्षिता (1976), बौद्ध धर्म का एक सर्वेक्षण, बैंगलोर, भारतीय विश्व संस्कृति संस्थान, पृष्ठ 82.

Doctrinal Orthodoxy

The Buddha adopted an absolutist view of Ultimate Reality though not a theistic one. He felt that many abstained from action in the faith that God would do everything for them. They seemed to forget that spiritual realization is a growth from within. When the educated indulged in vain speculations about the Inexpressible, the uneducated treated God as a being who could be manipulated by magic rites or sorcery. If God forgives us any way it makes little difference how we live. The Buddha revolted against the ignorance and superstition, the dread and the horror, which accompanied popular religion. Besides, theistic views generally fill men's minds with dogmatism and their hearts with intolerance. Doctrinal orthodoxy has filled the world with unhappiness, injustice, strife, crime, and hatred(Bapat, P.V.(1956), 2500 Years of Buddhism, Publication Division, Ministry of Information and Broadcasting, Government of India, Delhi.p.xi.

हिंदी में अनुवाद

सैद्धांतिक रूढ़िवाद

बुद्ध ने आस्तिक न होते हुए भी परम वास्तविकता के प्रति निरपेक्ष दृष्टिकोण अपनाया। उन्होंने महसूस किया कि कई लोग इस विश्वास के साथ कार्रवाई से दूर रहते हैं कि भगवान उनके लिए सब कुछ करेंगे। वे यह भूल गए कि आध्यात्मिक अनुभूति भीतर से होने वाला विकास है। जब शिक्षित लोग अव्यक्त के बारे में व्यर्थ की अटकलों में लगे रहते थे, तो अशिक्षित लोग ईश्वर को एक ऐसा प्राणी मानते थे, जिसे जादुई अनुष्ठानों या जादू-टोने से वश में किया जा सकता था। यदि ईश्वर हमें किसी भी तरह से माफ कर देता है तो इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि हम कैसे जीते हैं। बुद्ध ने अज्ञानता और अंधविश्वास, भय और आतंक के खिलाफ विद्रोह किया, जो लोकप्रिय धर्म के साथ था। इसके अलावा, आस्तिक विचार आम तौर पर लोगों के दिमाग को हठधर्मिता से और उनके दिलों को असहिष्णुता से भर देते हैं। सैद्धांतिक रूढ़िवादिता ने दुनिया को दुख, अन्याय, संघर्ष, अपराध और घृणा से भर दिया है (बापत, पी.वी. (1956), बौद्ध धर्म के 2500 वर्ष, प्रकाशन विभाग, सूचना और प्रसारण मंत्रालय, भारत सरकार, दिल्ली.p.xi.

BHEEM PATRIKA
भीम पत्रिका
Vol.1, Issue 12
October, 2024

Buddhism

Individual Emancipation

Buddhism goes counter to most religions in striking the Middle Way and in making its Teaching homocentric in contradistinction to theocentric creeds. As such Buddhism is introvert and is concerned with individual emancipation. The Dhamma has to be realized by oneself (sanditthiko). (Venerable Narada Mahathera (1998), The Buddha and His Teachings, Buddha Dharma Education Association, Nc. p.XI.

हिंदी में अनुवाद

व्यक्तिगत मुक्ति

बौद्ध धर्म प्रहार करने में अधिकांश धर्मों के विपरीत है।मध्य मार्ग और अपने शिक्षण को धर्मकेंद्रित पंथों के विपरीत समरूप बनाने में। वैसे तो बौद्ध धर्म अंतर्मुखी है।और व्यक्तिगत मुक्ति से चिंतित है। धम्म इसे स्वयं (सैंडिथिको) द्वारा महसूस किया जाना चाहिए। (आदरणीय नारद महाथेरा (1998), द बुद्ध एंड हिज टीचिंग्स, बुद्ध धर्म एजुकेशन एसोसिएशन, इंक. पी.XI.

The Experiential and Emotional Dimension of Buddhism

The experiential and emotional dimension of Buddhism -- Buddhism as a lived experience -- is extremely important. The Buddha's personal experience of enlightenment is the bedrock of the entire Buddhist tradition. Time and again he invoked his own experience as authority for his doctrines, and suggested that teachings not validated by personal experience were of little value. The Buddha's enlightenment also included an emotional aspect in the form of a profound compassion which motivated him to propagate his teachings, or Dharma. Out of compassion for the suffering of mankind he spent the greater part of his life spreading a teaching which he realized was 'hard to see and understand, subtle, to be experienced by the wise', for the benefit of the few 'with little dust in their eyes who are wasting through not hearing it' (M. i. 168).

हिंदी में अनुवाद

बौद्ध धर्म का अनुभवात्मक और भावनात्मक आयाम

बौद्ध धर्म का अनुभवात्मक और भावनात्मक आयाम - एक जीवंत अनुभव के रूप में बौद्ध धर्म - है
अत्यंत महत्वपूर्ण. बुद्ध की आत्मज्ञान की व्यक्तिगत अनुभूति इसका आधार है । संपूर्ण बौद्ध परंपरा. उन्होंने बार-बार अपने अनुभव को अपने अधिकार के रूप में दोहराया सिद्धांत, और सुझाव दिया कि व्यक्तिगत अनुभव द्वारा मान्य नहीं की गई शिक्षाएँ बहुत कम थीं कीमत। बुद्ध के ज्ञानोदय में एक भावनात्मक पहलू भी शामिल था । गहरी करुणा जिसने उन्हें अपनी शिक्षाओं, या धर्म का प्रचार करने के लिए प्रेरित किया। से बाहर उन्होंने अपने जीवन का अधिकांश समय मानव जाति की पीड़ा के प्रति करुणा फैलाने में बिताया । जिस शिक्षण के बारे में उन्हें एहसास हुआ कि वह 'देखना और समझना कठिन है, सूक्ष्म है, जिसे अनुभव किया जा सकता है।बुद्धिमान', कुछ लोगों के लाभ के लिए 'उनकी आँखों में थोड़ी धूल है जो बिना कुछ बर्बाद कर रहे हैं इसे सुनना)

Dr. Ambedkar once told Gandhi

As for embracing Buddhims, Dr. ambedkar had once told Gandhi that though he differed from him on the issue of Untocuhabilitywhen the time caem he would choose only the least harmful way for the country. ‘And that is the greatets benefit I am conferring on the country by embracing Buddhsim, he continued produly, ‘fro Buddhism is part and parcel of the Nharatiya culture. I have care that my conversion will not harm the tradition of the culture. (Sangharakshita(1986), Ambedkar and Buddhism, Windhorse Publications,Glasgow, p.132.

हिंदी में अनुवाद

डॉ अम्बेडकर ने एक बार गांधी जी से कहा था

जहां तक बौद्धों को गले लगाने की बात है, डॉ. अंबेडकर ने एक बार गांधीजी से कहा था कि हालांकि छुआछूत के मुद्दे पर वह उनसे अलग हैं, लेकिन समय आने पर वह देश के लिए सबसे कम हानिकारक रास्ता ही चुनेंगे। 'और बौद्ध धर्म को अपनाकर मैं देश को सबसे बड़ा लाभ पहुंचा रहा हूं, उन्होंने स्पष्ट रूप से कहा, 'बौद्ध धर्म नरतिया संस्कृति का अभिन्न अंग है। मुझे इस बात का ख्याल है कि मेरे धर्म परिवर्तन से संस्कृति की परंपरा को कोई नुकसान नहीं पहुंचेगा. (संघरक्षिता(1986), अम्बेडकर और बौद्ध धर्म, विंडहॉर्स प्रकाशन, ग्लासगो, पृष्ठ 132.

BHEEM PATRIKA
भीम पत्रिका
Vol.1, Issue 12

Books in English

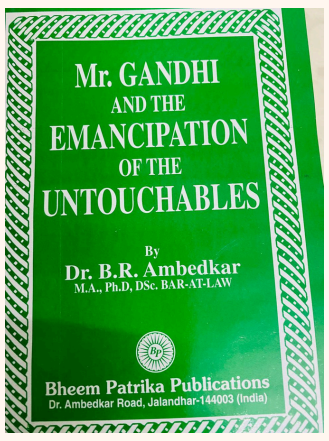

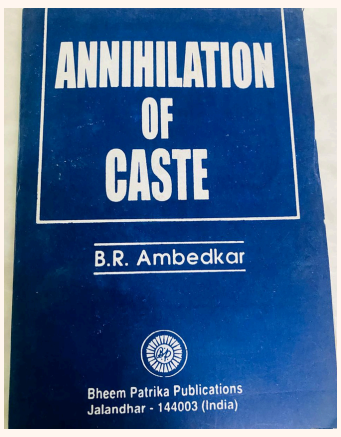

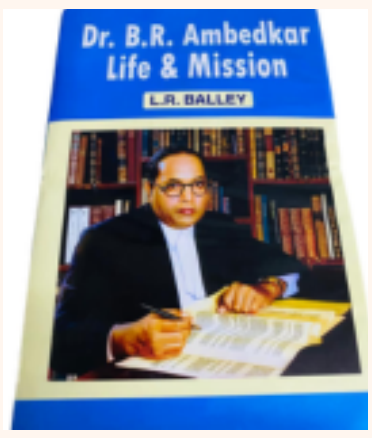

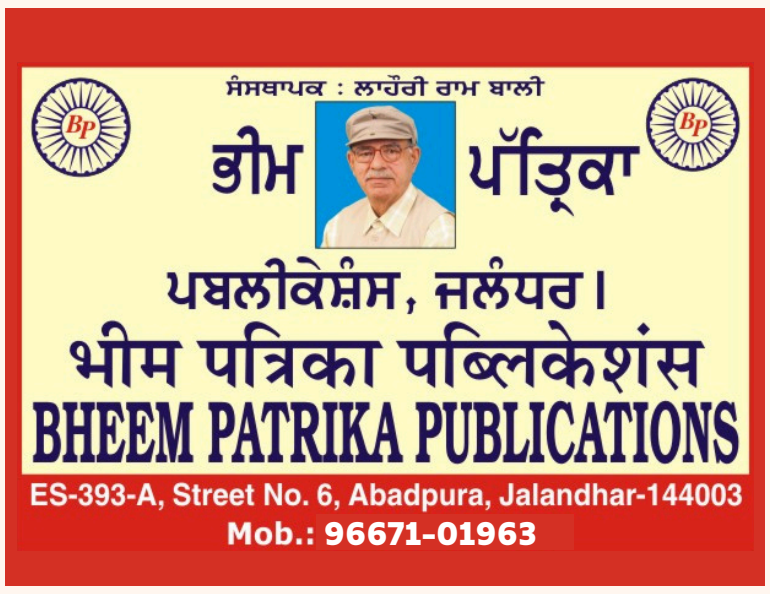

Books in Punjabi

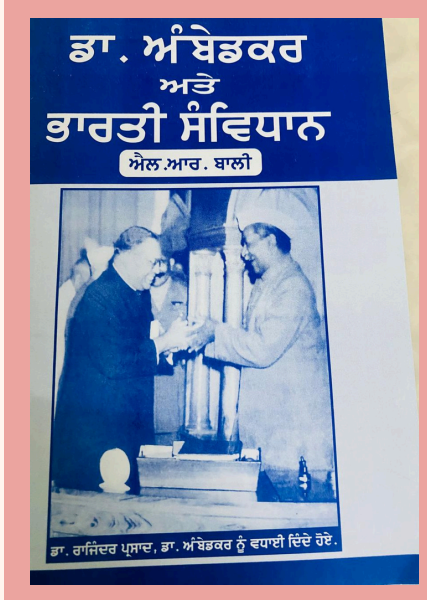

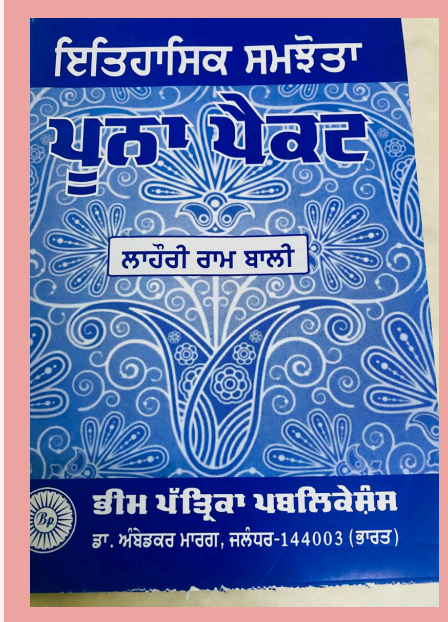

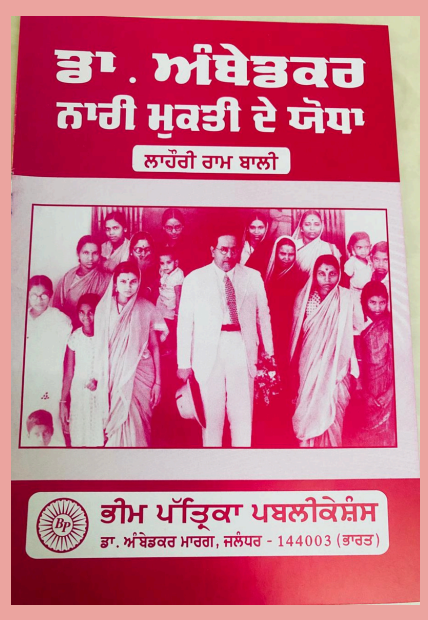

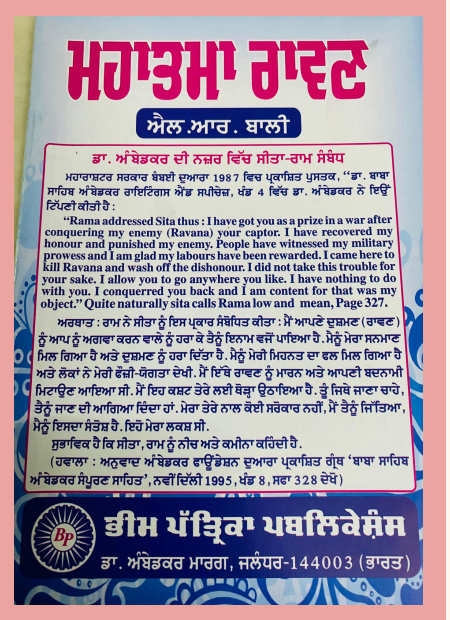

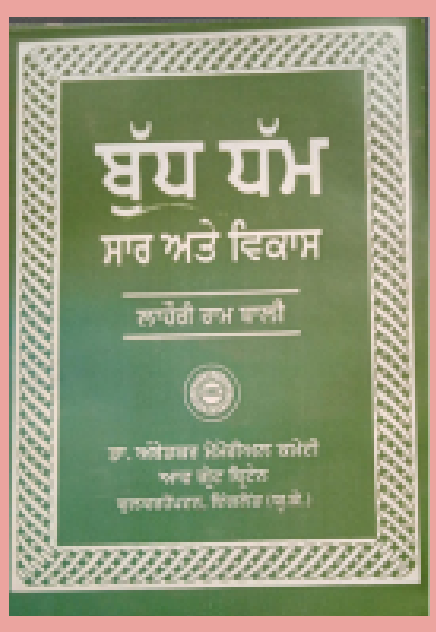

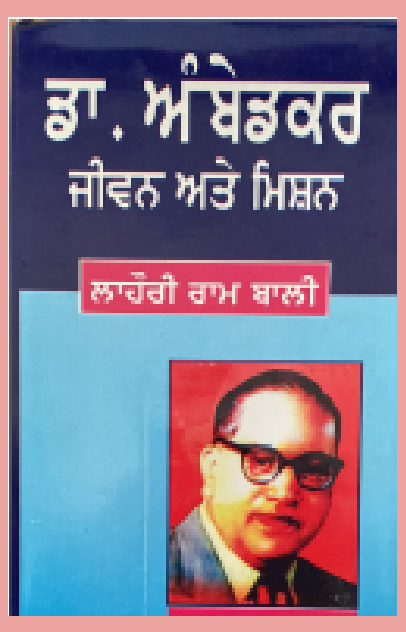

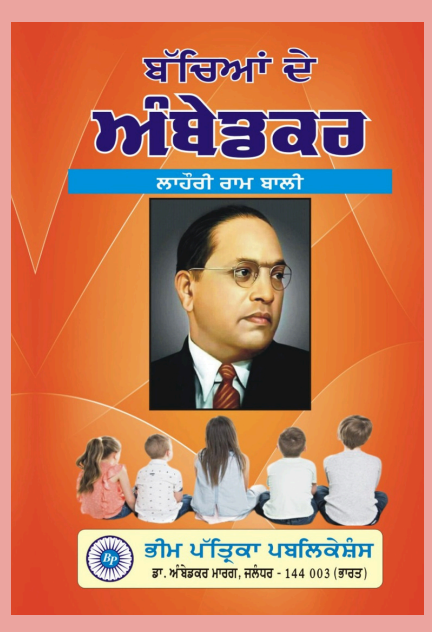

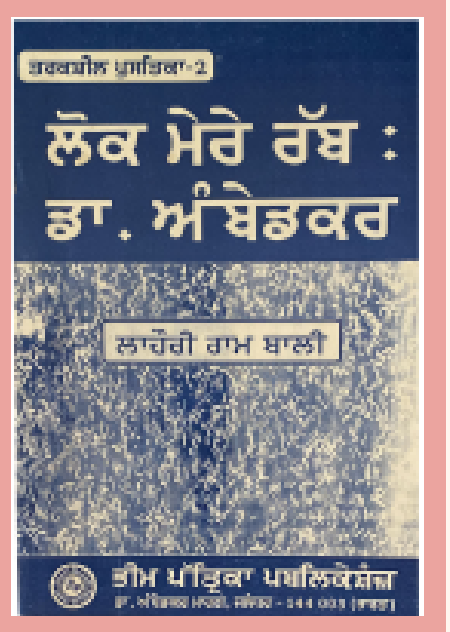

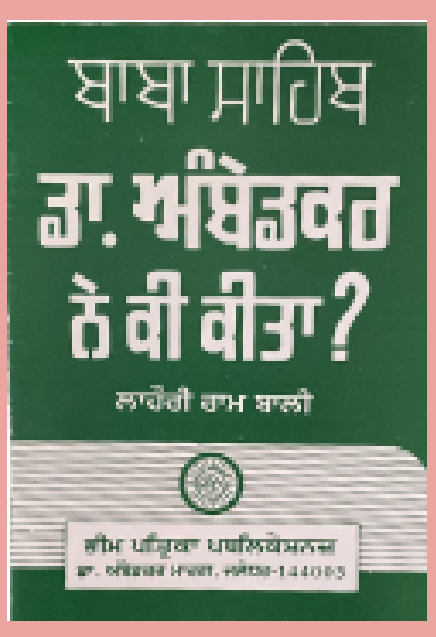

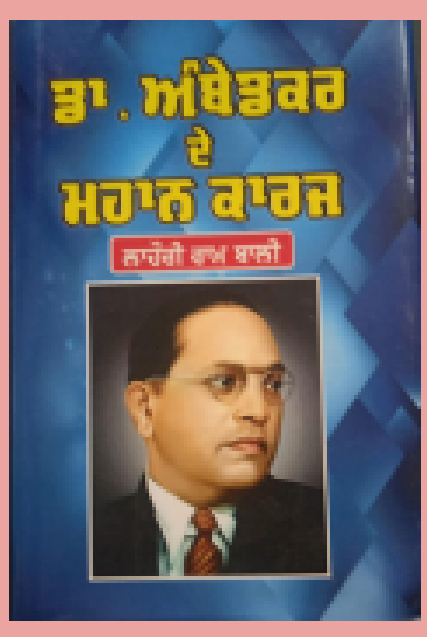

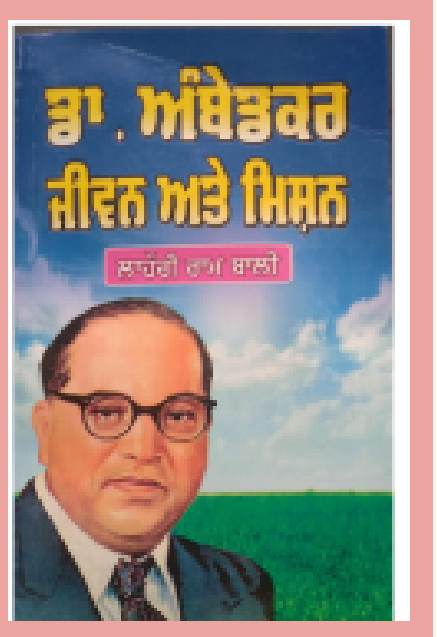

BHEEM PATRIKA
भीम पत्रिका
Vol.1, Issue 12

Books in Hindi

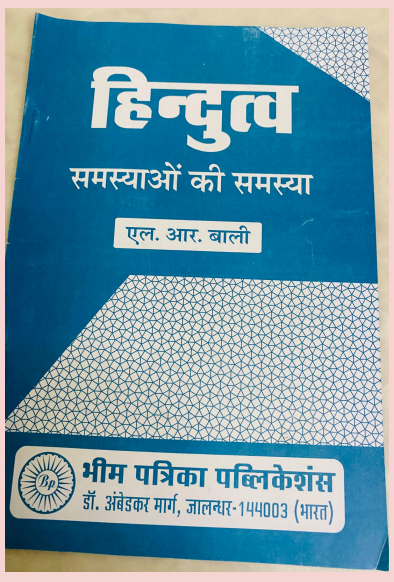

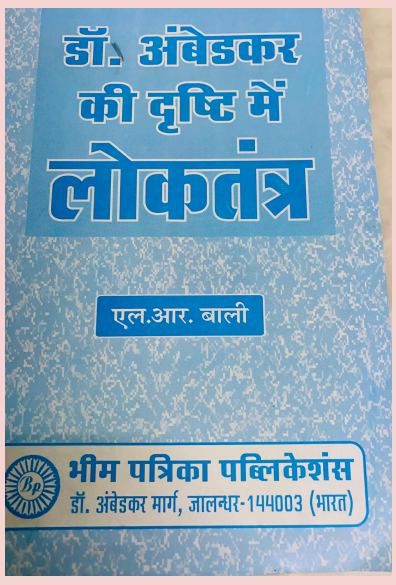

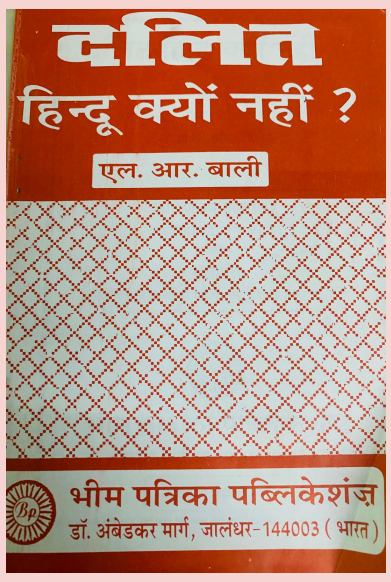

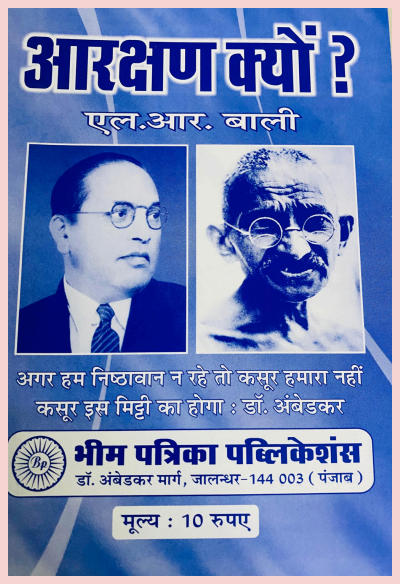

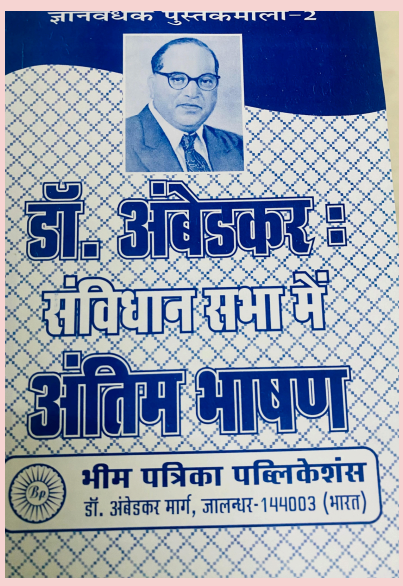

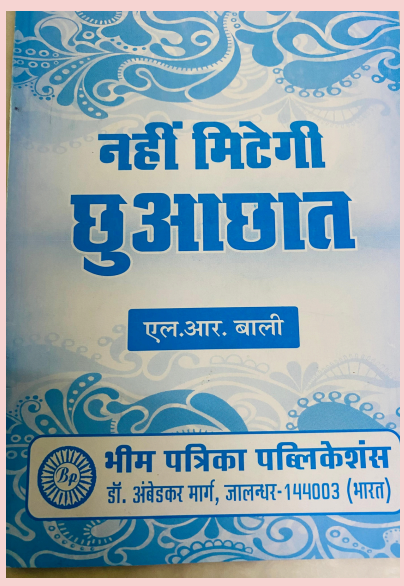

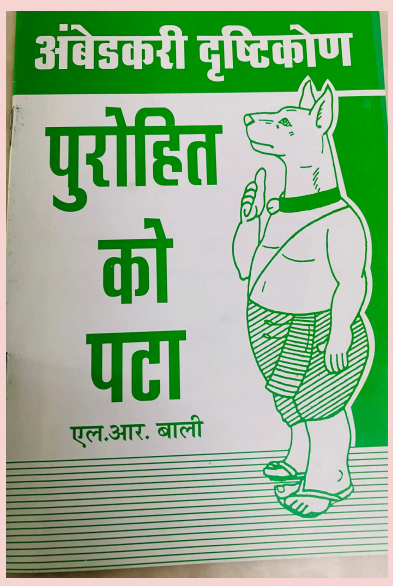

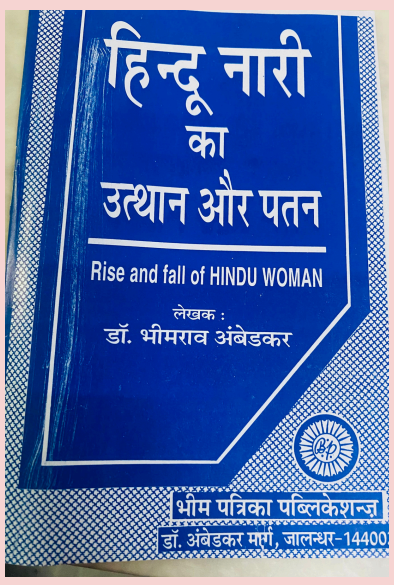

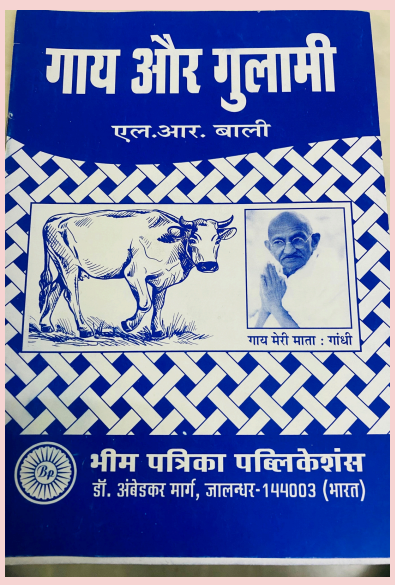

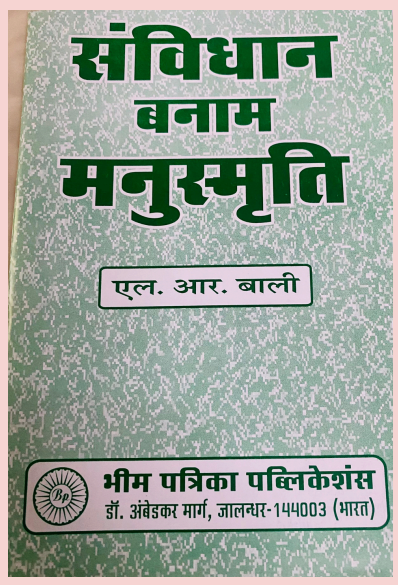

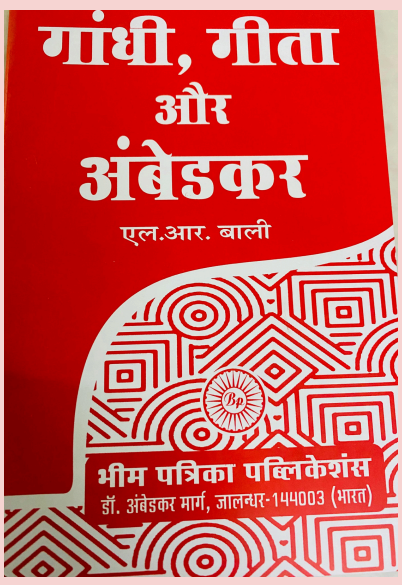

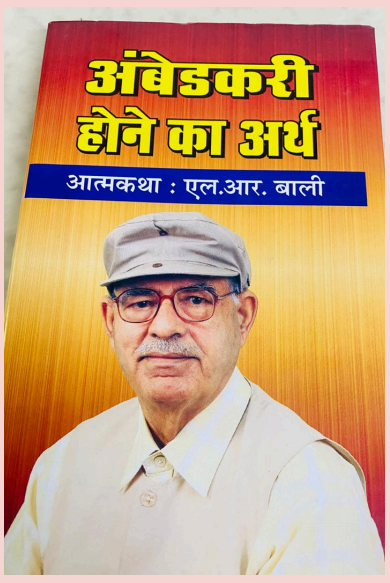

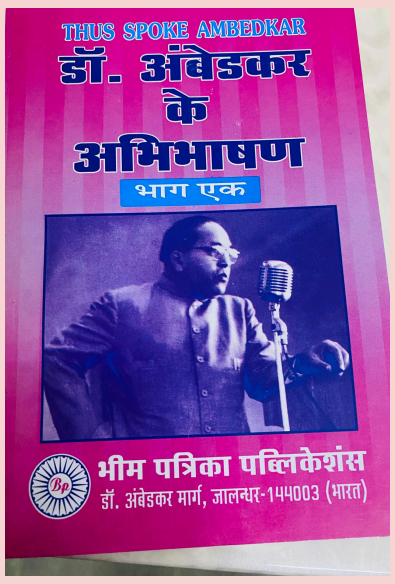

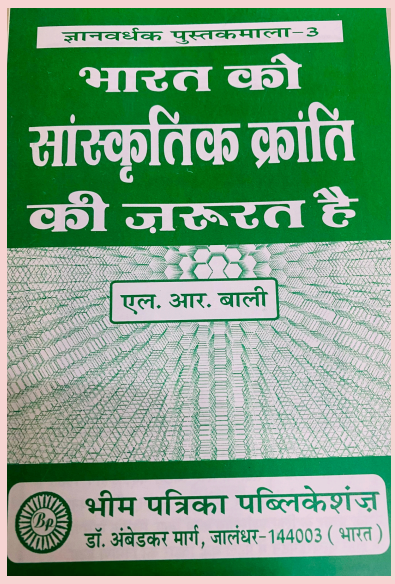

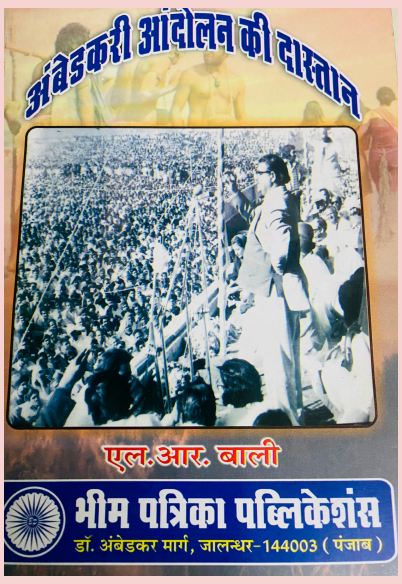

BHEEM PATRIKA
भीम पत्रिका

Vol.1, Issue 12

Books in Hindi

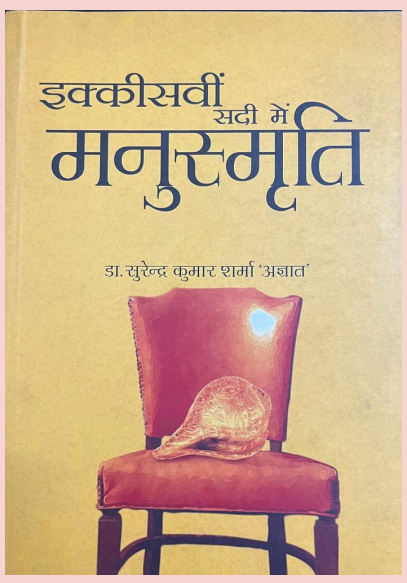

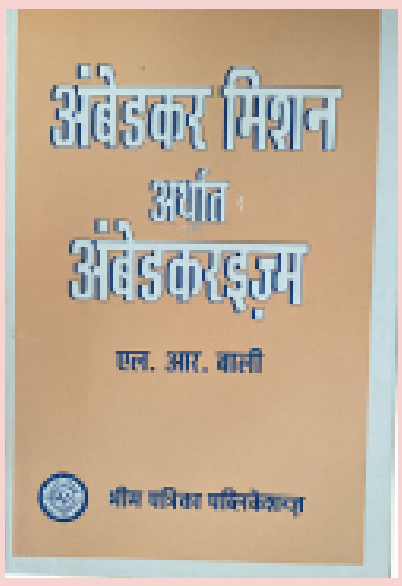

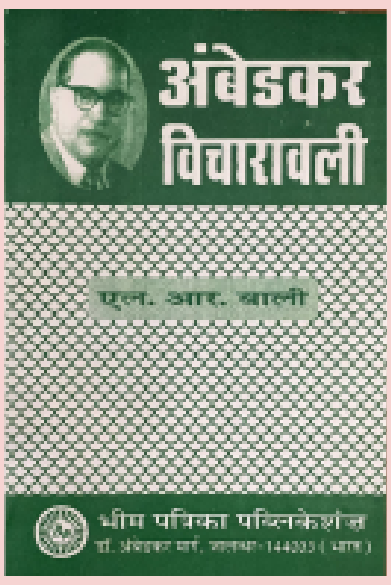

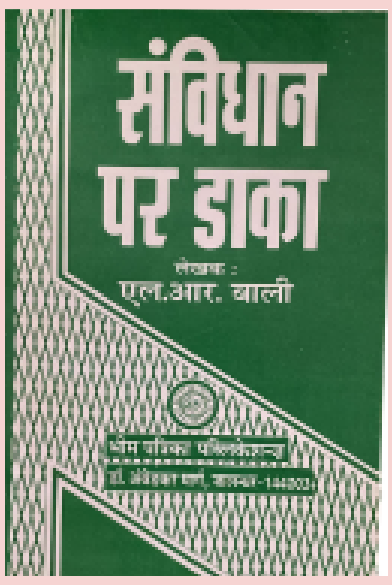

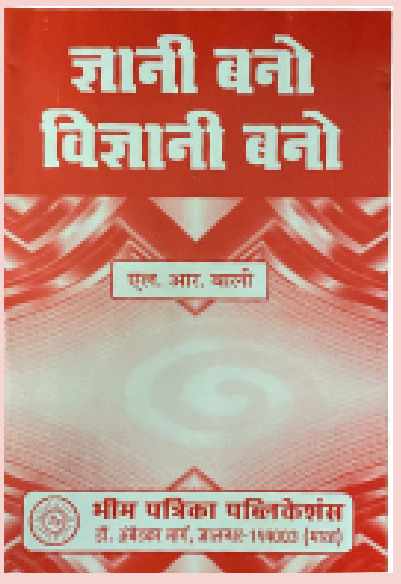

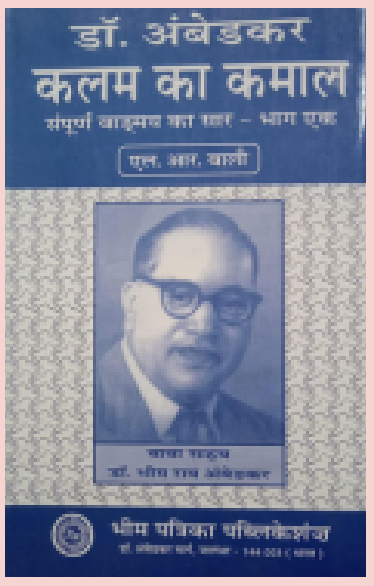

Contact Us:

Bheem Patrika Publications

ES-393-A, Abadpura,
Jalandhar city
Distt. Jalandhar 144003

Mob. - +91 - 96671 01963
E-mail - rkumar1100e@gmail.com
Web. - https://bheempatrika.in